दैनिक

पुष्पांजली टुडे

MPHIN/2021/83938

नई सोच नई पहल

ग्वालियरः वर्षः 4 : अंकः 44 | ग्वालियर,22 दिसम्बर शुक्रवार 2023 | पृष्ठः 8 मूल्यः 2 रुपए

बीजेपी की बंपर जीत और 17 साल तक सीएम रहे शिवराज

मामा की विदाई के लिए याद किया जाएगा साल 2023

बीत रहे साल 2023 में भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) ने मध्य प्रदेश विधानसभा का चुनाव जीतकर एक बार फिर अपनी सत्ता बरकरार रखी. यूं तो इस चुनावी साल में ऐसी कई घटनाएं हुई जिनका जिक्र मध्य प्रदेश की राजनीति में सालों साल किया जाएगा, लेकिन यह साल मध्य प्रदेश के इतिहास में अपने सबसे लंबे कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री रहे शिवराज सिंह चौहान की विदाई के लिए याद रखा जाएगा. मध्य प्रदेश में अगर साल 2023 की प्रमुख राजनीतिक घटनाओं की चर्चा की जाए तो सबसे ऊपर भारतीय जनता पार्टी की बंपर जीत को रखा जाएगा. सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के फेस को आगे करके चुनाव लड़ने वाली भारतीय जनता पार्टी ने 163 सीटें जीतकर मध्य प्रदेश में अपनी सत्ता बरकरार रखी. हालांकि इस जीत में पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की लाडली बहन योजना का भी अहम योगदान था, लेकिन पार्टी ने भविष्य की सोच को आगे रखते हुए उनकी जगह मुख्यमंत्री की कुर्सी ओबीसी वर्ग से आने वाले डॉक्टर मोहन यादव को सौंप दी.

शिवराज सिंह चौहान की अप्रत्याशित विदाइ-साल 2023 की दूसरी बड़ी राजनीतिक घटना शिवराज सिंह चौहान की विदाई को माना जाएगा. मध्य प्रदेश के गठन के बाद शिवराज सिंह चौहान सबसे ज्यादा चार बार मुख्यमंत्री रहे हैं. वे मध्य प्रदेश के साथ भारतीय जनता पार्टी के भी सबसे लंबे कार्यकाल वाले मुख्यमंत्री थे. शिवराज सिंह चौहान साल 2005 में अप्रत्याशित रूप से पहली बार मुख्यमंत्री बने थे. इसके बाद साल 2018 तक मुख्यमंत्री के पद पर बने रहे. साल 2018 के विधानसभा चुनाव में बीजेपी को बहुमत नहीं मिली, लेकिन मार्च 2020 में ज्योतिरादित्य सिंधिया की मदद से प्रदेश में फिर बीजेपी ने सरकार बनाई और शिवराज सिंह चौथी बार मुख्यमंत्री बने. देखा जाए तो बतौर मुख्यमंत्री शिवराज का कार्यकाल लगभग 17 साल का रहा है. लेकिन, पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की विदाई भी बेहद अप्रत्याशित रही, जो साल 2023 की प्रमुख राजनीतिक घटना बन गई.

मोहन यादव ने सीएम बन बटोरी सुर्खियां-साल 2023 में जितनी चर्चा शिवराज सिंह चौहान की विदाई की हो रही है, उतनी ही सुर्खियां नए मुख्यमंत्री मोहन यादव

भी बटोर रहे है. उज्जैन दक्षिण सीट से तीसरी बार विधायक बनने वाले डॉ. मोहन यादव मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री बन चुके हैं. यह मतगणना के कई दिनों बाद तक भी किसी ने नहीं सोचा था. डॉ मोहन यादव शिवराज सरकार में उच्च शिक्षा मंत्री थे. अब बीजेपी ने अपनी डबल इंजन की सरकार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ दूसरे इंजन के तौर पर डॉ मोहन यादव को जोड़ दिया है. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पृष्ठभूमि से आने वाले डॉ. मोहन यादव के लिए साल 2024 बेहद चुनौती पूर्ण होने वाला है, जब उन्हें राज्य के खाली खजाने के साथ मतदाताओं की आकांक्षाओं (जिसका आश्वासन पार्टी ने अपने घोषणा पत्र में दिया है) की पूर्ति करनी होगी.

लाडली बहना शिवराज सरकार का मास्टर स्ट्रोक-मध्य प्रदेश में विधानसभा चुनाव में जीत के लिए साल 2023 में बीजेपी और कांग्रेस ने एड़ी चोटी का जोर लगाया. मध्य प्रदेश के राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा आम है कि कांग्रेस नेता कमलनाथ ने चुनाव से बहुत पहले नारी सम्मान योजना की घोषणा करके बड़ी राजनीतिक भूल की थी. इसके मुकाबले तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान %लाडली बहना योजना% लेकर आए, जिसकी पहली किश्त उन्होंने जून महीने में जारी करते हुए कांग्रेस के ऊपर बड़ी राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक बढ़त ले ली. शिवराज सिंह चौहान की लाडली बहन योजना को विधानसभा चुनाव के लिए मास्टर स्ट्रोक माना गया, जिसके चलते बीजेपी की जीत का आंकड़ा 163 सीटों तक पहुंचा. फिलहाल मध्य प्रदेश सरकार एक करोड़ 31 लाख लाडली बहनों के खातों में 1250 रुपए प्रति माह की आर्थिक सहायता दे रही है.

एमपी कांग्रेस इकाई बड़ा फेर बदल-साल 2023 जाते-जाते मध्य प्रदेश कांग्रेस की राजनीति में भी बड़े परिवर्तन को लेकर आया. कांग्रेस को तमाम अनुमानों के विपरीत विधानसभा चुनाव में करारी हार का सामना करना पड़ा. इसके बाद तकरीबन 40 साल से मध्य प्रदेश की राजनीति के केंद्र में रहे कमलनाथ की कांग्रेस आलाकमान ने अचानक से पीसीसी चीफ के पद से छुट्टी कर दी. युवा तुर्क जीतू पटवारी को नया प्रदेश कांग्रेस मुखिया बनाया गया तो आदिवासी नेता उमंग सिंगार को नेता प्रतिपक्ष का दायित्व सौंपा गया. बीजेपी ने पूरे चुनाव अभियान के दौरान कमलनाथ और दिग्विजय सिंह पर वंशवाद की राजनीति करने का आरोप लगाया और कहा कि दोनों अपने बेटों (नकुलनाथ और जयवर्धन सिंह) को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं. साल 2023 के अंत में कांग्रेस का नेतृत्व युवाओं के हाथ में पहुंच गया.

संक्षिप्त समाचार

लाडली बहना योजना पर एमपी विधानसभा में हंगामा, कांग्रेस ने पूछा योजना आगे चलेगी या नहीं?

चार दिवसीय मध्य प्रदेश विधानसभा सत्र का गुरुवार (21 दिसंबर) को अंतिम दिन है. सत्र के अंतिम विपक्ष का खासा मुखर नजर आ रहा है. लाडली बहना योजना को लेकर सदन में जमकर हंगामा हो रहा है. विपक्ष का सवाल है कि पूर्ववर्ती शिवराज सिंह चौहान सरकार द्वारा शुरू की गई लाडली बहना योजना जारी रहेगी या नहीं? इस सवाल का जवाब देते हुए विधायक कैलाश विजयवर्गीय का दावा है कि हर गारंटी हर हाल में पूरी होगी.सत्र के अंतिम दिन कांग्रेस विधायक रामनिवास रावत ने सदन में सवाल करते हुए कहा कि मैं मुख्यमंत्री से यह जवाब चाहता हूं कि लाडली बहना योजना आगे चलेगी या नहीं? इस योजना के हितग्राहियों को महीने में दी जाने वाली राशि दी जाएगी या नहीं, मुख्यमंत्री स्पष्ट करें. कांग्रेस विधायक रामनिवास रावत के सवालों का जवाब देते हुए बीजेपी विधायक कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि बीजेपी का संकल्प पत्र, संकल्प पत्र नहीं पीएम मोदी की गारंटी है. यह गारंटी हर हाल में पूरी होगी.

कुश्ती में माहिर है सीएम मोहनद यादव-बीजेपी विधायक कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि यह विधानसभा बहुत बलिष्ठ और गरिष्ठ है. सीएम मोहन यादव में कई विशेषताएं हैं, वह यादव हैं, कुश्ती में माहिर हैं. कुश्ती महासंघ के अध्यक्ष हैं, तलवार चलाने में माहिर हैं और पढ़ाई में सबसे आगे हैं. इंदौर के मिल मजदूरों के भुगतान को लेकर सीएम मोहन यादव ने बड़ा फैसला लिया है.

कांग्रेस विधायक ने जताई नाराजगी-प्रदेश विधानसभा सत्र के आखिरी दिन कांग्रेस विधायक रामनिवास रावत काफी नाराज नजर आए. उन्होंने कहा कि विधानसभा की जानकारी नहीं मिलती है. रामनिवास रावत ने कहा कि सवाल लगाने पर जवाब दिया जाता है कि जानकारी एकत्र की जा रही है, इस पर रोक लगाई जानी चाहिए. जिम्मेदारी तय की जानी चाहिए ताकि समय पर सवालों के जवाब आ सकें

इंदौर में कोराना केस मिलने के बाद एमपी सरकार सतर्क, कोविड-19 को लेकर आदेश जारी

कोरोना वायरस संक्रमण के मामले को देखते हुए बुधवार को मध्य प्रदेश सरकार की ओर से आदेश जारी किए गए हैं. सरकार की ओर से जारी आदेश के मुताबिक प्रदेश में टीटीटी की रणनीति के तहत टेस्ट, ट्रैक और ट्रीटमेंट का पालन करते हुए व्यापक रूप से योजनाबद्ध तरीके से पहले की तरह संभावित रोगियों की जल्द पहचान और तुरंत इलाज की प्रक्रिया का पालन किये जाने के आदेश दिए गए हैं.कोरोना के तुरंत नियंत्रण के लिए पर्याप्त ऑक्सीजन सपोंटेड बेड, आईसीयू बिस्तर, वेंटिलेटर समेत सभी सुविधाएं सुनिश्चत किए जाने के आदेश दिए गए हैं. बता दें कि मालदीव की यात्रा के बाद गृह नगर इंदौर लौटे एक ही परिवार के दो लोग हफ्ते भर के भीतर कोरोना वायरस से संक्रमित पाए गए हैं.

कैबिनेट की बैठक में अहम फैसला, क्या सीएम की मंशा के अनुरूप इन अपराधियों को जेल भेज पाएगी एमपी पुलिस?

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री की कुर्सी संभालने के बाद डॉक्टर मोहन यादव ने कैबिनेट की बैठक में एक अहम फैसला लिया है. सीएम मोहद यादव के मुताबिक, मध्य प्रदेश में अपराधियों को सलाखों के पीछे पहुंचाने के लिए सीआरपीसी की धारा 437, 438, 439 की जमानत रद्द करवा कर अपराधियों के हौसलों पर पानी फेरा जाएगा. हालांकि इस घोषणा के बाद इस प्रकार के मामले अभी संज्ञान में नहीं आए हैं, जिसमें पुलिस ने जमानत रद्द करवाने के लिए अदालत में आवेदन दिया हो.दंड प्रक्रिया संहिता सीआरपीसी की धारा 437, 438, 439 में जमानत पाने का प्रावधान है. एडवोकेट वीरेंद्र शर्मा के मुताबिक, 438 में संदिग्ध आरोपी को अग्रिम जमानत हासिल करने का अधिकार है. जबकि 437 धारा में निचली अदालत से जमानत मिलती है. इसी प्रकार धारा 439 में सेशन अथवा हाई कोर्ट के माध्यम से उस

व्यक्ति को जमानत मिलती है, जिस पर पुलिस अपराधी होने का आरोप लगाती है. उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का फैसला समाज हित में है मगर जमानत देने अथवा नहीं देने का अधिकार माननीय न्यायालय के पास होता है. एडवोकेट वीरेंद्र शर्मा ने इस संबंध में आगे बताया कि हालांकि उक्त धाराओं में जमानत के लिए आवेदन लगाए जाते हैं. उन्होंने यह भी बताया कि मुख्यमंत्री ने जिस तरीके से ऐलान किया है उसके अनुसार पुलिस द्वारा जमानत हासिल करने वाले व्यक्ति के खिलाफ न्यायालय में जमानत रद्द करने का आवेदन लगा सकती है. शासन को इस प्रकार के अधिकार है. आवेदन पर अंतिम फैसला न्यायालय का ही मान्य होगा.

अभी तक एक भी आवेदन नहीं आया सामने -हाई कोर्ट एडवोकेट खगेंद्र सिंह तोमर के मुताबिक, मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के ऐलान के बाद अभी तक किसी भी बहुचर्चित मामले में इस प्रकार की जमानत निरस्त होने की बात मुख्यमंत्री के गृह नगर में ही सामने नहीं आई है. उन्होंने यह भी बताया कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव का फैसला स्वागत योग्य है, मगर इस फैसले पर अमल करना पुलिस का काम है. पुलिस जमाना रद्द करने के लिए आवेदन लगा सकती है. इसके बाद माननीय न्यायालय का फैसला सामने आएगा.

इन स्थितियों में हो सकती है जमानत रद्द-हाई कोर्ट एडवोकेट वीरेंद्र शर्मा के मुताबिक तीन प्रकार की स्थिति में अदालत जमानत रद्द भी कर सकती है. इनमें सबसे पहला मामला जमानत पाने के बाद आरोपी द्वारा साक्ष्य प्रभावित करना, पुलिस को जांच में सहयोग नहीं करना अथवा नए अपराध को जन्म देना. यह तीन ऐसे महत्वपूर्ण कारण है जिसके आधार पर जमानत रद्द किए जाने का अधिकार भी माननीय न्यायालय के पास होता है.

शिक्षा अधिकारी का स्कूलों को फरमान, बिना पूछे बच्चों को बनाया तो होगी कार्रवाई

मध्य प्रदेश के शाजापुर में जिला शिक्षा अधिकारी ने निजी और सरकारी स्कूल प्रबंधन को पत्र लिखकर क्रिसमस पर्व पर अभिभावकों के अनुमति के बिना स्कूली बच्चों को सांता क्लॉज बनाने को लेकर निर्देश जारी किए हैं. आदेश का उल्लंघन करने पर स्कूल की मान्यता भी रद्द हो सकती है.मध्य प्रदेश के शाजापुर में क्रिसमस को लेकर जिला शिक्षा विभाग की ओर से निर्देश जारी किए गए हैं. इन निर्देशों में स्पष्ट रूप से उल्लेख किया गया है कि कोई भी स्कूल प्रबंधन द्वारा बिना अभिभावकों की लिखित अनुमति के स्कूली बच्चों को सांता क्लॉज नहीं बनाया जाएगा. इस नियम का उल्लंघन करने वालों पर नियम अनुसार वैधानिक कार्रवाई की जाएगी.शाजापुर के जिला शिक्षा अधिकारी विवेक दुबे ने एबीपी न्यूज़ से चर्चा के दौरान बताया कि हर साल यह देखने में आता है कि क्रिसमस पर्व पर कई स्कूल प्रबंधन द्वारा बिना अभिभावकों की अनुमति के छोटे बच्चों को सांता क्लॉज बना दिया जाता है. जिसके बाद कई बार विवाद की स्थितियां भी निर्मित होती है.अभिभावकों द्वारा शिक्षा विभाग से शिकायत भी की जाती रही है. इसी बात को ध्यान में रखते हुए अभी से शाजापुर जिले के सभी निजी और सरकारी स्कूलों को निर्देश जारी कर दिए गए हैं.

एमपी व्यापम घोटाला मामला, सीबीआई अदालत ने 2 आरोपियों को सुनाई 4 साल की कठोर कारावास की सजा

मध्य प्रदेश के ग्वालियर की विशेष सीबीआई अदालत ने पुलिस कांस्टेबल भर्ती-2013 परीक्षा से जुड़े एक मामले में अभ्यर्थी सतेंद्र सिंह यादव और नकलची जितेंद्र कुमार को चार-चार साल के कठोर कारावास की सजा सुनाई है. उन पर 14,100 रुपये जुर्माना भी लगाया गया है. इस परीक्षा को व्यापम ने आयोजित कराया था. सीबीआई के एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, एजेंसी ने सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के अनुपालन में 18 अगस्त 2015 को तत्काल मामला दर्ज किया था. अधिकारी ने कहा, %%15 सितंबर 2013 को व्यापम (भोपाल) की एमपी पुलिस कांस्टेबल भर्ती परीक्षा 2013 (द्वितीय) में गलत पहचान के आरोप में मधुराज सिंह के खिलाफ 11 फरवरी 2014 को पुलिस स्टेशन कम्पू ग्वालियर में दर्ज मामले की जांच सीबीआई ने अपने हाथ में ले ली थी.÷ यह भी आरोप लगाया गया कि उम्मीदवार मधुराज सिंह 1 फरवरी 2014 को 14वीं बटालियन, एसएएफ ग्राउंड (ग्वालियर) में आयोजित एमपी पीसीआरटी-2013 (द्वितीय) की शारीरिक दक्षता परीक्षा में उपस्थित थे, लेकिन, फोटो मिलान नहीं होने के कारण अधिकारियों ने उसे रोक दिया.

पांच साल की कठोर कारावास की सजा सुनाई थी-जांच के बाद राज्य पुलिस ने उक्त आरोपियों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किया था. सीबीआई जांच के दौरान पता चला कि मधुराज सिंह लिखित परीक्षा में शामिल नहीं हुआ था. सीबीआई ने 26 अप्रैल 2016 को आरोपियों के खिलाफ पहली सप्लीमेंट्री चार्जशीट दाखिल की थी. इससे पहले, मामले में सीबीआई के स्पेशल जज ने 24 दिसंबर, 2018 को अपने फैसले में मधुराज सिंह को जुर्माने के साथ पांच साल की कठोर कारावास की सजा सुनाई थी.

नए समूह के खिलाफ दूसरी सप्लीमेंट्री चार्जशीट दायर की-अन्य आरोपियों/संदिग्धों के खिलाफ आगे की जांच जारी रखी गई. जिसमें पता चला कि एक अन्य उम्मीदवार सतेंद्र सिंह यादव की पहचान को पीसीआरटी 2013 (द्वितीय) में सॉल्वर जितेंद्र कुमार से बदल दिया गया था.

छिंदवाड़ा से कांग्रेस सांसद नकुल नाथ लोकसभा से सस्पेंड, अब तक कुल 146 एमपी हुए निलंबित

छिंदवाड़ा से कांग्रेस सासंद और पूर्व मुख्यमंत्री कमल नाथ के बेटे नकुल नाथनकुल को गुरुवार को लोकसभा से सस्पेंड कर दिया गया. अब तक लोकसभा से कुल 146 सांसदों को सस्पेंड कर दिया गया है. गुरुवार को लोकसभा से तीन सांसदों को निलंबित किया गया है.लोकसभा स्पीकर ने सदन की अवमानना को लेकर कांग्रेस के सांसद और कमलनाथ के बेटे नकुलनाथ, डीके सुरेश और दीपक बैज को चल रहे शीतकालीन सत्र से निलंबित कर दिया है. इसके साथ लोकसभा से निलंबित सांसदों की कुल संख्या 146 हो गई है.बता दें कि लोकसभा से सांसदों के सस्पेंड करने का सिलसिला 14 दिसंबर को शुरू हुआ था. विपक्ष संसद की सुरक्षा में सेंध लगाने के मामले में गृह मंत्री अमित शाह से बयान देने की मांग उठाई थी. 13 दिसंबर को दोपहर में संसद की सुरक्षा में चूक का मामला सामने आया था. इस मुद्दे पर कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह का बयान सामने आया है. उन्होंने इस लेकर नाम न लेते हुए केंद्र सरकार पर निशाना साधा है.विपक्षी सांसदों ने दोनों सदनों से सदस्यों के निलंबन पर विरोध जताते हुए गुरुवार को संसद भवन से एक मार्च निकाला. राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की अगुवाई में विपक्षी सांसदों ने संसद भवन से विजय चौक तक पैदल मार्च किया. विपक्षी सांसदों ने एक बड़ा बैनर ले रखा था जिस पर 'लोकतंत्र बचाओ' लिखा था.खरगे ने दावा किया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और गृह मंत्री अमित शाह संसद से जुड़े विषयों पर सदन के बाहर बोल रहे हैं जो विशेषाधिकार हनन का मामला बनता है. उन्होंने संवाददाताओं से कहा, '' सरकार और मोदी जी यह नहीं चाहते कि सदन चले.''खरगे ने कहा, ''हम लोकसभा में, संसद की सुरक्षा में सेंध की घटना से जुड़ा विषय उठाना चाहते थे कि यह क्यों हुआ, कैसे हुआ और इसके लिए कौन जिम्मेदार है. हम चाहते थे कि सरकार सदन को इस बारे में बताए. प्रधानमंत्री और गृह मंत्री दोनों सदन में नहीं आए.वे, सदन में जिन बातों को कहना है, उन्हें बाहर बोल रहे हैं.''

पूर्व वनमंत्री विजय शाह की चिकन पार्टी की जांच शुरू, पचमढ़ी रेंज पहुंचे डिप्टी डायरेक्टर

मध्य प्रदेश सरकार के पूर्व वन मंत्री विजय शाह की सतपुड़ा टाइगर रिजर्व (एसटीआर) में चिकन पार्टी की जांच शुरू हो गई है. सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के डिप्टी डायरेक्टर संदीप फैलोज बुधवार (20 दिसंबर) को पचमढ़ी पहुंचे. डायरेक्टर फैलोज एसटीआर के पश्चिम रेंज में आने वाले रेंजर, डिप्टी रेंजर, फॉरेस्ट गार्ड और चौकीदार से पूछताछ कर रहे हैं. इधर पूर्व वन मंत्री विजय शाह का कहना है कि मैं चिकन नहीं खाता हूं.सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के कोर एरिया के दो वीडियो वायरल हुए थे. इन वायरल वीडियो में कोर एरिया में फारेस्ट गार्ड चिकन, बाटी और भरता पकाते दिख रहे हैं. एक वीडियो में हरसूद बीजेपी विधायक विजय शाह उनके मित्र का है, जो शाह ने खुद बनाया है. दोनों वीडियो 15 से 18 दिसंबर के बीच के बताए जा रहे हैं.

खुले में बिक रहा मांस,सीएम के आदेश का नही हो रहा पालन,युवाओं ने दिया शिकायती आवेदन

अर्पित गुप्ता उपसम्पादक
पुष्पांजली टुडे

दबोह-नगर के युवाओं ने स्थानीय समस्याओं को लेकर दबोह थाना प्रभारी को ज्ञापन सौपा।वहीं नगर परिषद कार्यालय पर जा कर अध्यक्ष प्रतिनिधि को दो सूत्रीय ज्ञापन सौपा।जिसमे मांग की गई है कि भिंड भांडेर रोड़ पर खुलेआम मास की दुकानें लगाई जा रही हैं।नगर के कुछ दुकानदार रोड़ पर मुर्गा बेचने की दुकानें अभी लगा रहे हैं।जबकि मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री ने अभी हाल ही में एक आदेश दिया था कि नगर में कोई भी खुलेआम मीट नही बेचेगा पर नगर दबोह में मुख्यमंत्री के आदेश की सरेआम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।वही कुछ दुकानदारों ने अपनी मीट की दुकानें अपने घरों पर लगा ली पर कुछ चुनिंदा दुकानदार आज भी नगर के सार्वजनिक जगहों पर अंडे तथा मास की दुकानें लगायें हुए हैं जिससे राहगीरों को निकलने में काफी दिक्कत महसूस होती हैं।कुछ लोग तो मंदिरों के पास ही अपने अंडे की दुकान लगाने से बाज नही आ रहे हैं।वहीं नगर के कोच तिराहा,अस्पताल रोड़,भिंड भांडेर रोड़ पर सब्जी विक्रेताओ ने अपने हाथ ढेले लगाकर अस्थाई अतिक्रमण कर लिया है। जिससे भिंड भांडेर रोड़ पर जाम की स्थिति बनी रहती हैं।जिसके चलते लोगों का पैदल निकलना दुर्लभ हो गया है।यदि किसी व्यक्ति को आपातकाल में हॉस्पिटल ले जाना पड़े तो उसे जाम की स्थिति से गुजरना पड़ता है।नगर के युवाओं ने इन्ही समस्याओं को लेकर एक दो सूत्रीय ज्ञापन दबोह थाना प्रभारी परमानन्द शर्मा तथा दूसरा ज्ञापन दबोह नगर परिषद कार्यालय पहुंच कर दबोह नगर परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि नरेंद्र दुधारिया को दिया।ज्ञापन देने बालो में सर्व शिवम लम्बरदार,हरिओम टिकरिया,अनुज उपाध्याय,सुमित मिश्रा,दीपू शुक्ला,बिरजू महाराज, राजा यादव,शोभित कुरचानिया,संदीप कुरचानिया,गौरव तिवारी,नीसु कौरव,सत्यवीर कौरव,मनोज कौरव,हर्षित पाल,बीरेंद्र झा प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

करमावास पट्टा में नि:शुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर 24 दिसंबर को

दैनिक पुष्पाजंली टुडे
/नारायणलाल सेंणचा

पाली । सीरवी समाज बैंगलोर सोजत क्षेत्र के तत्वाधान में बैंगलोर की प्रतिष्ठित संस्था ,प्रोजेक्ट दृष्टि, के चेयरमैन एवं कर्नाटक सरकार द्वारा सम्मानित डॉ नरपत सोलंकी एवं प्रोजेक्ट दृष्टि के अनुभवी चिकित्सक एवं पाली जिला अंधता निवारण समिति के मुख्य चिकित्सा अधिकारी के सहयोग से निःशुल्क विशाल नैत्र परीक्षण एवं शल्य चिकित्सा शिविर का आयोजन धर्मगुरू दीवान के सानिध्य में दिनांक 24 दिसंबर 2023 रविवार को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करमावास पट्टा में होने जा रहा है। शिविर के आयोजक फाऊलाल परिहारिया ने बताया कि मरीजों की जाँच राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय करमावास पट्टा में की जाएगी। और उन्हें शल्य चिकित्सा के लिए बस द्वारा मोकमपुरा रोड रानी में स्थित लॉयन्स हॉस्पिटल में ले जायेगा। उन्होंने कहा कि मरीज एवं उसके सहायक एक के अवास व खान -पान की निःशुल्क व्यवस्था लॉयन्स हॉस्पिटल मोकमपुरा रोड रानी में की गई है। भंवरलाल चोयल ने बताया कि जांच में पाये गये सभी जरूतमंदो की नेत्र शल्य चिकित्सा तकनीक से टाकें रहित होगी तथा उचित लैंस लगाये जायेंगे। जरूरतमंदो को चश्मे व दवाईयां भी मुफ्त दी जाएगी। शिविर को लेकर करमावास पट्टा में प्रचार अभियान शुरू किया है। इस कार्यक्रम में शिविर के आयोजक पेमाराम गहलोत, किशनाराम चौधरी, दिलीप चौधरी, ताराराम परिहारिया, पीताराम राठौड़ सहित सभी आयोजक मौजूद रहेंगे।

आने वाले वर्ष के लक्ष्य निर्धारित करे- विक्रम कोठारीप्त

जीतो नॉर्थ की महिलाओं द्वारा सेमिनार का आयोजन

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

बेंगलूरू ।जीतो बेंगलुरु नॉर्थ की महिला विंग द्वारा जीतो की योजना सेंटर फोर एक्सलेंस के अन्तर्गत एक सेमिनार का आयोजन राजाजीनगर स्थित कार्यालय में किया गया। अध्यक्ष बिंदु रायसोनी के नेतृत्व में आयोजित सेमिनार ÷मास्टरिंग गोल सेटिंग-गेटिंग रेडी फोर 2024÷ में प्रशिक्षक यशवीर इनकॉरपोरेशन के विक्रम कोठारी ने आने वाले नव वर्ष में लक्ष्य निर्धारण पर प्रशिक्षण दिया। उन्होंने कहा कि नए साल पर सबसे जरूरी है कि हम अपना लक्ष्य बनायें। लक्ष्य निर्धारण व्यवहार और व्यवसाय दोनों में सफलता के रोडमैप के रूप में काम करता है। जिनके पास उद्धेश्य होता है, वे इसे पूरा करने के लिए अधिक मेहनत करते हैं।अपनी आकांक्षाओं को स्पष्ट रखते हुए प्रगति के पथ पर बढ़ते रहेंगे। पीपीटी के ज़रिए विक्रम ने बताया कि अपने लक्ष्यों को पहचानने की कोशिश करे और सुनिश्चित करें कि आपके लक्ष्य आपके लिए सार्थक हो। अपने लक्ष्यों को मापने योग्य बनायें ताकि अपनी सफलता को माप सके। सबसे जरूरी बात की ओर आह्वान करते हुए बताया कि अपने लक्ष्यों की दिशा में काम करने के लिए खुद को एक समय सीमा दें, इससे आपको प्राथमिकताएं तय करने और पथ पर बने रहने में मदद मिलेगी तथा प्रबंधनीय चरणों में विशिष्ट कार्य व संसाधन भी शामिल करे। जीतो बेंगलुरु नॉर्थ के उपाध्यक्ष व मीडिया प्रभारी सिद्धार्थ बोहरा के अनुसार सेमिनार में उत्साही महिलाओं रेखा ललवानी, किरण लुनिया, विमला मूणोत ने भी लक्ष्य निर्धारण पर विचार रखे। नवकार महामंत्र से सेमिनार का शुभारंभ हुआ। अध्यक्ष बिन्दु रायसोनी ने सभी का स्वागत किया। सहमंत्री पिंकी मेहता, कार्यसमिति सदस्य नीता गादिया, मीना बडेरा आदि भी उपस्थित थे। प्रशिक्षक का जीतो द्वारा सम्मान किया गया। संयोजिका सुष्मिता सेठिया ने व्यवस्था में सहयोग किया। सह-संयोजिका रुचिका पटावरी ने प्रशिक्षक का परिचय दिया एवं संचालन किया। महामंत्री सुमन वेदमुथा ने धन्यवाद दिया। राष्ट्रगान के साथ सेमिनार का समापन हुआ।

सीरवी स्टार निठूर ने जीती आईजी कप प्रतियोगिता ,मधुगिरी क्लब रही उपविजेता

दैनिक पुष्पाजंली टुडे

तूमकूर। सीरवी स्पोर्ट्स क्लब तुमकूर के तत्वाधान में आईजी कप क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन एस.एस. आईटी कॉलेज कुनिगल रोड मैदान में खेला गया। इस प्रतियोगिता में सीरवी समाज की कुल 6 टीमों ने भाग लिया ।सीरवी स्टार निठूर और मधुगिरि क्लब के बीच फाइनल मुकाबला हुआ। जिसमें सीरवी स्टार निठूर ने जीत हासिल की। वही मधुगिरी क्लब उपविजेता रही। समाज की ओर से विजेता-उपविजेता दोनों टीमों को ट्रॉफी व नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। सीरवी समाज तुमकूर संस्था के सचिव रतनलाल सेंणचा ने कहा कि हार जीत एक सिक्के के दो पहलु हैं।

हार से व्यक्ति को कभी निराश नही होना चाहिए। उन्होंने कहा जीवन में आने वाली चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा खेल से मिलती है। खेल हमारे जीवन में आवश्यक रूप से शामिल होना चाहिए। खेल से शारीरिक व मानसिक विकास होता है। इस अवसर पर स्पोर्ट्स क्लब तुमकुर के अध्यक्ष जोगाराम सेपटा, महिला मण्डल अध्यक्ष रेखा गहलोत, लता चोयल, नारायणलाल चोयल, पूनाराम परिहार, धर्माराम बर्फा, कसाराम , सोहनलाल, प्रकाश बर्फा , महेंद्र सेंणचा, अरविंद सेणचा और कमेंट्रेटर शिवलाल व अन्य गणमान्य सदस्य उपस्थित थे। स्पोर्ट्स क्लब के कोषाध्यक्ष पूनाराम परिहार ने कहा कि सभी खिलाड़ियों ने खेल को खेल की भावना से खेला और शांति पूर्वक प्रतियोगिता का समापन हुआ ।

अनुविभागीय अधिकारी गोहद के निर्देशन में सभी थाना प्रभारियों ने बैंकों में जाकर की रुटीन चेकिंग

दैनिक पुस्पांजलि टुडे

गोहद-गोहद अनुभागी अधिकारी सौरभ कुमार के निर्देशन में अनुभाग्य के सभी थाना प्रभारी ने अपने-अपने क्षेत्र में पहुंचकर बैंकों में रूटीन चेकिंग की इस दौरान अनुविभागीय अधिकारी सौरभ कुमार एवं थाना प्रभारी गोहद राजेश शर्मा ,गोहद चौराहा थाना प्रभारी प्रदीप सोनी, मालनपुर थाना प्रभारी डॉक्टर संतोष यादव एण्डोरी थानाड़ प्रभारी हरजेन्द्र चौहान ने अपने अपने क्षेत्रों में संचालित बैंकों में रुटीन चेकिंग करते हुए बैंकों में मोजूद सभी उपभोक्ताओं से पूछताछ की एवं सभी उपभोक्ताओं की पासबुक एवं परिचय पत्र के माध्यम से पहचान करते हुए सभी से पूछताछ की अचानक बैंकों में पुलिस पहुंचते देख लोग अचंभित हो गए जहां सभी उपभोक्ताओं से पूछताछ करने के बाद पुलिस ने सभी को चेतावनी भी दी कि बैंकों में बेबजह प्रवेश न करें बैंक संबंधित कार्य कराने के लिए जाते समय अपने वैध दस्तावेज लेकर जाये इसके अलावा कोई भी बाहरी व्यक्ति अगर मोबाइल से ओटीपी मांगता है या किसी प्रकार का फ्रोड करता है तो उसे अपनी खाते से संबंधित जानकारी साझा न करें यदि बैंक के नाम पर कोई जानकारी मांगता है तो स्वयं बैंक में जाकर अधिकारियों को अपनी समस्या से अवगत कराएं

जन्मदिन के शुभअवसर पर रेड क्रॉस सोसायटी में किया रक्तदान - विश्वकर्मा

उप संपादक महेंद्र शर्मा

कल ग्वालियर में विश्वकर्मा जन संगठन के प्रदेश अध्यक्ष मनोज विश्वकर्मा जी के जन्मदिन के शुभ अवसर पर रेड क्रॉस सोसाइटी में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया जिसमें अतिथि के रूप में पूर्व विधायक माननीय श्री बृजेंद्र तिवारी जी आरोग्य भारती के जिला सचिव माननीय श्री जेपी शर्मा जी रेड क्रॉस सोसाइटी के सचिव श्री नवलकिशोर शुक्ला जी संगठन के संरक्षक श्री मोहन विश्वकर्मा जी मुख्य रूप से उपस्थित रहे ।जिसमें चार लोगों ने रक्तदान किया संगठन के प्रदेश अध्यक्ष मनोज विश्वकर्मा जी प्रदेश कार्यालय प्रभारी सुदामा विश्वकर्मा जी संगठन के संगठन के जिला कोषाध्यक्ष राजेंद्र विश्वकर्मा संगठन के कार्यकर्ता मलेंद्र विश्वकर्मा इत्यादि लोगों ने रक्तदान किया संगठन के प्रदेश अध्यक्ष मनोज विश्वकर्मा जी ने बताया कि आज मैंने अपने जन्मदिन के शुभ अवसर पर संगठन के सभी साथियों के साथ रक्तदान किया और मानव जीवन में अपने लिए तो सभी लोग जीते हैं लेकिन कुछ काम हमें दूसरे लोगों के लिए करना चाहिए जिससे वास्तविक जरूरतमंदों को सहयोग कर सकें सामाजिक क्षेत्र में मन की संतुष्टि के लिए इस तरीके के छोटे-छोटे कार्यक्रम हमें करते रहना चाहिए और आगे भी हम इसी तरह के कार्यक्रम संगठन के नेतृत्व में करते रहेंगे । इस अवसर पर संगठन के ग्वालियर महानगर के अध्यक्ष वीर सिंह विश्वकर्मा जिला सचिव रामनारायण विश्वकर्मा अभिषेक मित्तल वरिष्ठ पत्रकार दीपक दिलेर अमन दुवे हिमांशु कुशवाहा अर्जुन कुशवाहा राजेंद्र विश्वकर्मा सचिन विश्वकर्मा इत्यादि लोग मुख्य रूप से उपस्थित रहे ।

खरगोन शहर की वार्ड कृमाक 30 की महिलाओं द्वारा इकट्ठा होकर नगर पालिका अध्यक्ष मेम छाया जोशी से मुलाकात कर बताई गई अपनी समस्य

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो पुष्पांजलि टुडे

नगर पालिका खरगोन शहर के वार्ड कृमाक 30 की समस्यायों को लेकर मिडिया कर्मिय पंकज सिंह ठाकुर अय्युब खान ने अध्यक्ष से मिलकर चर्चा की अध्यक्ष द्वारा इस मामले को गंभीरता से लेकर शिग्र हाल करने हेतु कहा गया खरगोन शहर के वार्ड कृमाक 30 की महिलाओं ने नाली निर्माण एवं खंरजा नहीं होने से परेशान होकर अपनी समस्याओं से आज खरगोन नगर पालिका अध्यक्ष मेम छाया जोशी से मिले महिलाओं ने वार्ड की सारी समस्याओं से अध्यक्ष को अवगत कराया गया मिडिया कर्मिय अय्युब खान पंकज सिंह ठाकुर वार्ड कृमाक 30 में पहुंचे सेंकड़ों महिला एकत्रित होकर मिडिया कर्मियों को अवगत कराया गया इस मामले को लेकर मिडिया द्वारा अपने निजी मोबाइल से नगर पालिका अध्यक्ष मेम छाया जोशी से चर्चा की उन्होंने बताया गया की मे इस वार्ड कृमाक 30 की पार्षद भी हु मेरे शहर नगर पालिका खरगोन शहर में हर वार्ड को मे प्राथमिकता तौर से देखुगी में वार्ड कृमांक 30 की महिलाओं द्वारा मेरे संज्ञान में समस्या को बताया गया नगर पालिका अध्यक्ष मेम छाया जोशी द्वारा बताया गया की आभी आभी विधानसभा चुनाव हुए हैं और सरकार का गठन हो चुका है मैं मौका स्पाट पर सब इंजीनियर को भेजुगी

श्री राम मंदिर संपर्क अभियान को लेकर लारोन मंडल की बैठक हुई सम्पन हुई

विवेक राय रिपोर्टर
पुष्पांजली टुडे

टीकमगड़ । ग्राम आलमपुरा में लारोन मंडल की बैठक रखी गई थी जिसमे सभी राम भक्त व दुर्गाबाहनी बहनों ने मिल कर आलमपुरा झाड़ी बाबा मंदिर पर सभी ने संकल्प लिया कि हम सभी कार्यकर्ता मिल कर राम मंदिर संपर्क अभियान को सफल बनाएंगे व घर घर जा कर पीले चावल बाटेंगे लारोंन मंडल के पालक राजेंद्र राय द्वारा सभी कार्यकर्ताओं को दिशा निर्देश दिए जिससे घर घर जा कर सभी को आमंत्रित किया जाये साथ ही राजेन्द्र राय द्वारा बताया गया है कि 22 जनवरी को हो रही श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा एक बार जरूर देखने जाये और अपने आस पास के मंदिरों पर व अपने घरों में अधिक से अधिक दीप जरूर जलाये व एक दीपावली मनाये

गोहद एवं चोराहा थाना क्षेत्र में पुलिस ने किया रात्रि कालीन गस्त

दैनिक पुष्पांजलि टुडे

गोहद । गोहद एवं चौराहा क्षेत्र में पुलिस ने रात्रि कालीन गस्त करते हुए सभी वाहनों की चेकिंग की बुधवार गुरुवार की दरम्यानी रात को एसडीओपी गोहद सौरभ कुमार, थाना प्रभारी गोहद राजेश शर्मा एवं थाना प्रभारी गोहद चौराहा प्रदीप सोनी अपने अपने समस्त बल के साथ गोहद के जगह-जगह लगने वाले प्वाइंटों पर पहुंचे जहां बाजार की गलियों में घूम कर पुलिस गस्त कल रहे पुलिस कर्मियों को चैक किया एवं बाजार दिखने बारे लोगों से पूछताछ की इसके पश्चात नगर में भ्रमण करने के बाद गोलंबर तिराहा एवं गोहद चौराहा पर हाईवे पर सभी निकलने वाले वाहनों की चेकिंग की एसडीओपी सौरभ कुमार एवं दोनों थाना प्रभारी के साथ पुलिस बल ने रात्रि 12-30 बजे से चेकिंग करना शुरू की जिसमें रात्रि लगभग 3 बजे तक एक सैकड़ा से अधिक वाहनों की चेकिंग की गई इस दौरान रास्ते में आने जाने वाले पदार्थ को भी चेक किया एवं अन्य सामग्री लेकर जाने वाले सभी वाहनों की चेकिंग की जिसमें दो पहिया चार पहिया से लेकर बड़े-बड़े वाहनों की भी पुलिस द्वारा चेकिंग की गई जिससे कि हाईवे से निकलने वाले वाहनों में कोई भी मादक पदार्थ या अमानक वस्तु ना निकल सके रात्रि 3 बजे तक सभी पुलिस बल ने प्रत्येक वाहन की चेकिंग की इस दौरान उप निरीक्षक सहायक उपनिरीक्षक सहित लगभग एक दर्जन से अधिक आरक्षक शामिल थे

नपा ने सार्वजनिक एवं सामुदायिक शौचालयों की ग्रेडिंग की

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो पुष्पांजलि टुडे

स्वच्छ सर्वेक्षण 2024 के अंतर्गत क्लीन टॉयलेट कैंपेन के तहत नगर पालिका परिषद खरगोन मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री एमआर निगवाल एवं स्वास्थ्य अधिकारी श्री प्रकाश चित्ते के मार्गदर्शन में शासन के निर्देशानुसार सार्वजनिक एवं सामुदायिक शौचालयों के ग्रेडिंग के लिए स्व-सहायता समूह का चयन कर प्रशिक्षण दिया गया। इसके पश्चात 15 दिसंबर से सभी सार्वजनिक एवं सामुदायिक शौचालय की मेघा स्व-सहायता समूह, ओम शांति स्व-सहायता समूह एवं रघुकुल स्व-सहायता समूह की महिला सदस्यों द्वारा शौचालय के मापदंड के अनुसार व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर सार्वजनिक व सामुदायिक शौचालयों की ग्रेडिंग की गई। साथ ही जन जागरूकता अभियान भी चलाया जा रहा है।

मऊगंज कलेक्टर अजय श्रीवास्तव ने सिविल अस्पताल मऊगंज का किया औचक निरीक्षण

अनुपस्थित डॉक्टरों एवं कर्मचारियों को नोटिस देने का दिया निर्देश

दैनिक पुष्पांजलि टुडे
पुष्पेंद्र सिंह सेंगर
जिला ब्यूरो चीफ मऊगंज

मऊगंज --मऊगंज कलेक्टर अजय श्रीवास्तव सिविल अस्पताल मऊगंज का औचक निरीक्षण करने पहुंचे जहां उन्होंने अस्पताल में भारी अर्थव्यवस्थाओं को दिखा। ओपीडी में काटी गई पर्चियां को संज्ञान में लिया और हॉस्पिटल में लाइट व्यवस्था सुदृढ़ ना होने पर नाराजगी जताई ।लाइट कटी पाए जाने पर जनरेटर का उपयोग न होने पर नाराजगी जाहिर की, वहीं उपस्थिति रजिस्टर चेक कर अनुपस्थित रहे डॉक्टरों डॉक्टर मंसूरी ,सी बी एम ओ डॉक्टर चौधरी ,रवि प्रताप सिंह, पूनम नामदेव, कार्तिकेय पांडेय सहित कई कर्मचारियों को नोटिस देने का निर्देश दिया ।कलेक्टर मऊगंज नर्स ड्यूटी रुम ,इंजेक्शन कक्ष सहित जनरल वार्ड का निरीक्षण किया और आवश्यक दिशा निर्देश दिए वही पोषण पुनर्वास केंद्र का निरीक्षण कर हितग्राहियों को न मिलने वाले फलों पर नाराजगी जाहिर की और स्व सहायता समूह को नोटिस जारी करने का निर्देश दिया ।मऊगंज कलेक्टर के अचानक पहुंचने पर अस्पताल परिसर में अफरा तफरी का माहौल रहा जहां कर्मचारी अपनी कमियों को छुपाते नजर आए। आए दिन सिविल अस्पताल मऊगंज में डॉक्टरों के अनुपस्थित रहने और मरीजों के साथ दुर्व्यवहार को लेकर खबरें आती रहती है जिसको संज्ञान में लेते हुए आज अचानक कलेक्टर सिविल अस्पताल पहुंचे जहां अनुपस्थित कर्मचारियों अधिकारियों को तत्काल नोटिस जारी करने का निर्देश दिया। देखना है कि इसके बाद भी कर्मचारियों अधिकारियों में अपने कर्तव्य का बोध होता है या यूं ही सिलसिला चलता रहेगा।

ओल्ड इज गोल्ड यादों का कारवां स्टार अवार्ड का आयोजन 25 को

पुष्पांजली टुडे

रीवा। शिव क्रिएशन इवेंट के तत्वावधान में स्टार अवार्ड ओल्ड इज गोल्ड ÷यादों का कारवां÷ का आयोजन दिनांक 25 दिसंबर 2023 को कृष्णा राज कपूर ऑडिटोरियम में आयोजित किया जा रहा है! जिसमें सन 1970 से 1990 दशक के गीतों की मंच से प्रस्तुति होगी! उक्त कार्यक्रम की जानकारी देने प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी ईश्वरीय विश्विद्यालय के आश्रम में पत्रकार वार्ता का आयोजन किया गया! जिसको प्रमुख रूप से राजयोगिनी बी. के. निर्मला दीदी, कार्यक्रम के आयोजक शिव कुशवाहा, कार्यक्रम की सहयोगी सीमा श्रीवास्तव, युवा समा?सेवी सिद्धार्थ श्रीवास्तव, युवा गायक नीलेश श्रीवास्तव, समाजसेवी अवनीश शर्मा, संगीतकार डॉ प्रवीर दुबे, सुनील साहू, मनीष साहू, डॉ विनोद तिवारी, हिमांशु श्रीवास्तव एवं संजय राजपूत ने संबोधित किया !पत्रकार वार्ता में आगे बताया कि नृत्य एवं गीत के चयन के लिए पहले ऑडीशन तीन चरणों में आयोजित किये गए! पहला चरण 16 वर्ष तक स्टार जूनियर अवार्ड, दूसरा चरण 17 से 30 वर्ष तक स्टार सीनियर अवार्ड एवं तीसरा चरण 31 से 60 वर्ष वर्ष तक स्टार सुपर सीनियर अवार्ड के रूप में विभक्त किया गया !पत्रकार वार्ता के माध्यम से कार्यक्रम के आयोजकों ने समस्त संगीत एवं नृत्य प्रेमियों से कार्यक्रम में शामिल होने की अपील की है!

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के लिए लगाए जा रहे शिविर

पुष्पांजली टुडे

रीवा। रीवा जिले में प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि का लाभ दो लाख 52 हजार 943 किसानों को मिल रहा है। इन किसानों को तीन समान किश्तों में कुल 6 हजार रुपए की राशि हर साल प्राप्त हो रही है। इसके अलावा कई किसानों के आवेदन पत्र ऑनलाइन दर्ज हुए हैं। इनमें बैंक खाते, ई केवाईसी तथा अन्य कठिनाई के कारण राशि का भुगतान नहीं हो पा रहा है। इन कठिनाईयों को दूर करने के लिए जिले में 6 दिसम्बर से 15 जनवरी तक शिविर लगाए जा रहे हैं। इस संबंध में अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह ने बताया कि ग्राम स्तर पर शिविर लगाकर तथा विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के किसानों की कठिनाईयाँ दूर की जा रही हैं। उनके आधार संख्या से जुड़े बैंक खाते, डीबीटी तथा ई केवाईसी की जानकारी प्राप्त करके ऑनलाइन सुधार किया जा रहा है। जिन किसानों को आवेदन के बाद भी योजना से राशि प्राप्त नहीं हुई है वे कॉमन सर्विस सेंटर के माध्यम से बायोमेट्रिक के आधार पर अथवा पीएम किसान पोर्टल में दर्ज किए गए मोबाइल नम्बर पर ओटीपी के माध्यम से ई केवाईसी करा सकते हैं। बैंक खाते में आधार सीडिंग के लिए किसान अपनी आधार संख्या की फोटोकापी तथा बैंक पासबुक की फोटोकापी के साथ संबंधित बैंक शाखा में संपर्क करके आधार सीडिंग कराएं। पोस्ट आफिस में भी किसान आधार पर आधारित खाता खोलकर योजना का लाभ ले सकते हैं।

कलेक्टर ने सिरमौर चौराहा में बन रहे फ्लाई ओवर निर्माण कार्य का किया निरीक्षण

पुष्पांजली टुडे

रीवा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने गत दिवस अपने भ्रमण के क्रम में सिरमौर चौराहा में निर्माणाधीन फ्लाई ओवर कार्य का निरीक्षण किया। उन्होंने सेतु निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्य में और गति लाते हुए शीघ्र कार्य पूरा करें। फ्लाई ओवर के निर्माण के साथ ही स?क एवं नाली निर्माण कार्य को भी पूरा करने के निर्देश कलेक्टर ने निर्माण एजेंसी को दिए। उन्होंने नगर निगम के अधिकारियों को बोदाबाग रोड एवं सिविल लाइन में सीवर कार्य को शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। इस दौरान आयुक्त नगर निगम श्रीमती संस्कृति जैन, अधीक्षण यंत्री शैलेन्द्र शुक्ल, सेतु निर्माण विभाग के कार्यपालन यंत्री वसीम खान एवं निर्माण एजेंसी के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

रीवा की महिमा नें दिखाया हौसला, कलेक्ट्रेट पहुंचकर जाहिर की पड़ने की इच्छा,

पड़ाई के लिये एनजीओ से दिलाई गई मदद, बच्ची को दिलाया जाएगा सीपीसीटी में प्रवेश

जिला प्रशासन नें किया सहयोग

पुष्पांजली टुडे

रीवा। समाज में कई ऐसे बच्चे है जो पड़ना तो चाहते है लेकिन उन्हें या तो मौका नहीं मिल पाता या फिर वह अपनी इच्छा को जाहिर नही कर पाते। लेकिन रीवा में आज एक बच्ची नें पड़ाई के लिये ऐसा हौसला दिखाया कि उसकी तारीफ करने के साथ साथ आगे की पड़ाई के लिये मदद का आश्वासन मिला है। महिमा सतनामी नाम की एक बच्ची नें कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचकर कलेक्टर से आगे की पड़ाई की इच्छा जाहिर करते हुये प्रशासन से मदद मांगी। बच्ची के इस हौसले को देखते हुये बच्ची को एनजीओ की मदद से उसकी पड़ाई के साथ-साथ सुरक्षित रहने और खाने पीने की भी व्यवस्था कराई है। महिमा सतनामी जिले के गोविंदगढ थाना क्षेत्र अमिलकी गांव की रहने वाली है। महिमा नें हाईस्कूल व हायर सेकड्री के साथ बीएससी व बीएड की पड़ाई की है लेकिन उसकी इच्छा आगे और पड़ाई करने की है और शिक्षक बनना उसका उद्देश्य है। महिमा सीपीसीटी में दाखिला चाहती थी लेकिन उसकी एवं उसके परिवार की माली हालत उसके आगे की पड़ाई में बांधा बन रही थी, ऐसे में महिमा नें हौसला दिखाते हुये कलेक्टर कार्यालय पहुंची और कलेक्टर से आगे की पड़ाई के लिये इच्छा जाहिर की जिसके बाद कलेक्टर नें एडीएम को बच्ची की मदद के लिये निर्देशित किया। बच्ची की वह इच्छा पूरी की गई जिसकी उसने कलेक्टर से जाहिर की थी। प्रभारी कलेक्टर डॉ. सौरभ सोनवणे एवं एडीएम शैलेन्द्र सिंह नें अभ्युदय उपकार फाउंडेशन की मदद से महिमा के रहने खाने पीने के साथ साथ उसके आगे की पड़ाई की व्यवस्था कराते हुये सीपीसीटी में प्रवेश दिलाने का आश्वासन दिया और उसे आने जाने के लिये साइकल भी उपलब्ध कराई गई। एडीएम शैलेन्द्र सिंह नें कहा कि महिमा नें जिस तरह से पड़ाई के लिये हौसला दिखाया है वह काबिले तारीफ है और उसकी हर संभव मदद की जाएगी।

जिले भर में विकसित भारत संकल्प यात्रा से लाभान्वित हो रहे हैं पात्र हितग्राही

रीवा। विकसित भारत संकल्प यात्रा जिले भर में आयोजित की जा रही है। जिले में 21 दिसम्बर को गंगेव विकासखण्ड के पहरखा में संकल्प यात्रा का शिविर लगाया गया। शिविर में लगभग तीन सौ व्यक्ति शामिल हुए। शिविर में स्वास्थ्य विभाग द्वारा 40 लोगों के स्वास्थ्य की जाँच की गई। शिविर में 195 व्यक्तियों को विकसित भारत का संकल्प दिलाया गया। शिविर में शासन की विभिन्न योजनाओं से संबंधित क्विज का आयोजन किया गया। इसमें 33 हितग्राहियों ने अपनी भागीदारी निभाई। जिले में 21 दिसम्बर को ही जवा विकासखण्ड के हरदौली, गहिलवार, रायपुर कर्चुलियान विकासखण्ड में इटौरा, सौनौरा, जोगिनहाई तथा महसुआ, विकासखण्ड रीवा में बरा एवं रूपौली, विकासखण्ड सिरमौर में कुम्हरा, जु?वानी, देवगांव कला, जामू तथा पाली एवं त्योंथर विकासखण्ड में पटहट कला में संकल्प यात्रा के शिविर आयोजित किए गए। संकल्प यात्रा के दौरान स्वास्थ्य विभाग द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार शिविर लगाकर हरदोली में 301, इटौरा में 120, जोगिनहाई में 126, बरा में 418, रूपौली में 414, कुम्हरा में 115, जामू में 216 तथा पटहट कला में 106 लोगों को लाभान्वित किया गया। इन शिविरों में अग्रणी बैंक प्रबंधक एसके सक्सेना के नेतृत्व में विभिन्न बैंक शाखाओं द्वारा शिविर लगाकर हितग्राहियों के अटल पेंशन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, सुरक्षा बीमा योजना तथा अन्य योजनाओं के के आवेदन पत्र भरवाए गए। हितग्राहियों के बैंक खातों में आधार सीडिंग भी की गई। संकल्प यात्रा में चल रहे प्रचार वाहन में ऑडियो-विजुअल माध्यम से स?कों के विकास, स्वसहायता समूह गठन, प्रधानमंत्री आवास योजना, जलजीवन मिशन, प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना, मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम तथा विभिन्न बीमा योजनाओं की जानकारी दी गई। प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि की रोचक जानकारी किसानों को दी गई। ग्रामीण क्षेत्र के साथ-साथ शहरी क्षेत्र में भी विकसित भारत संकल्प यात्रा आयोजित की गई। जिले में 21 दिसम्बर को नगर परिषद मनगवां तथा नगर परिषद बैकुण्ठपुर में संकल्प यात्रा के शिविर लगाए गए। शिविर में शासन की विभिन्न योजनाओं की जानकारी हितग्राहियों को दी गई।

सिंघाना में हिंदू उत्सव समिति द्वारा श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव

धार (सिंघाना) – अयोध्या प्रभु राम जी की है आज अयोध्या भव्यता के साथ सज रही है। हिंदू समाज के पराक्रम और शौर्य से आज भव्य नवीन मंदिर निर्माण हो रहा है। भारत पूरे विश्व के लिए राजधानी बनने वाला है उक्त प्रेरक उद्बोधन सिंघाना में हिंदू उत्सव समिति द्वारा श्री राम जन्मभूमि प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव सिंघाना मंडल की वृद्ध बैठक सिर्वी समाज धर्मशाला सिघाना में बजरंग दल प्रांत मिलन प्रमुख मंगलेश जी सोनी ने कहीं। उन्होने आगे कहा कि यह हमारे लिए हर्ष का विषय है कि आज भव्यता के साथ भव्य मंदिर निर्माण हो रहा है। और हम सबके लिए सौभाग्य का विषय है। आज हमें अक्षत पुष्प कलश के माध्यम से प्राण प्रतिष्ठा में आने का आमंत्रण मिला है। इस कार्यक्रम के निर्मित हम सबको भगवान श्री राम का चित्र एवं पीले चावल आमंत्रण पत्र घर-घर तक पहुंचना है। हम सबको इसमें सहभागी होना चाहिए। मेरा गांव मेरी अयोध्या और सबके राम सब में राम के साथ ही हमें भव्य उत्सव हमारे गांव के मोहल्ले और बस्ती हमारे घर के आंगन में मनाना है। उन्होंने आगे बताते हुए कहा की राम जन्मभूमि आंदोलन 500 वर्षों के संघर्ष काल के इतिहास के बारे में वृत्तांत बताया, किस तरह हमारे राम भक्त बलिदान हुए और यह लंबे अंतराल तक संघर्ष चला। इस अवसर पर सिंघाना मंडल के सात ग्रामों से आए राम भक्तों को अक्षत पुष्प कलश देकर अपने गंतव्य की प्रस्थान किया। इसके पूर्व अतिथियों द्वारा भगवान श्री राम दरबार के चित्र पर माल्यार्पण दीप प्रज्वलित कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इस अवसर पर मंचासीन अतिथि माननीय जिला संचालक जी राजेंद्र पाटीदार, आयोजन के मंडल संयोजक दिनेश पाटीदार मंचासीन थे। इस अवसर पर डोंगरगांव, कोसवाड़ा, पलासी, बुदियाखेड़ी, अजंदीकोट शाला, करोदिया, ब्रह्मामणपुरी, रणतलाब आदि ग्रामों से बड़ी संख्या में राम भक्तों ने कार्यक्रम में सहभागिता की।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का गणपुर में हुआ शुभारंभ यात्रा सिरसी पहुंची।

धार (मनावर) - भारत सरकार द्वारा विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं का संचालन राज्य सरकार की सहभागिता से क्रियान्वयन किया जा रहा है इस दिशा में नागरिकों को उपलब्ध लाभ और विभिन्न सुविधाओं के बारे में जागरूकता सुनिश्चित करना एवं समाज में अंतिम व्यक्ति तक योजना की पहुंच को सुगम बनाए जाने के उद्देश्य से विकसित भारत संकल्प यात्रा का आयोजन किया जा रहा है देश के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय नरेंद्र जी मोदी का कहना है कि हमारा संकल्प विकसित भारत राष्ट्र प्रथम की भावना के साथ राष्ट्र के लिए निरंतर प्रयास हर भारतीय का मनोभाव बन रहा है केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को जन-जन तक पहुंचाना ही सरकार का उद्देश्य है और इसी संकल्प के साथ जनता के बीच संकल्प यात्रा के माध्यम से जन जागरूकता है शासन का उद्देश्य है ग्राम गणपुर में दिनांक 17 12 2023 को संकल्प यात्रा प्रात 11ः00 बजे शासकीय हायर सेकेंडरी स्कूल प्रांगण गणपुर चौकड़ी पर पहुंची जहां पर यात्रा का शुभारंभ यात्रा प्रभारी मोहन जी भायल भाजपा विधानसभा प्रत्याशी व जिला पंचायत सदस्य शिवराम गोपाल जी कन्नौज रंजना जी बघेल जिला पंचायत सदस्य कपिल जी सोलंकी जनपद अध्यक्ष रुकमा मुवेल महेंद्र जी परीहार नारायण जी सोनी गणेश जर्मन व भाजपा के समस्त पदाधिकारी द्वारा किया गया। यात्रा ग्राम सिरसी दोपहर 1ः00 बजे पहुंची जहां पर यात्रा का स्वागत सत्कार किया गया ग्राम पंचायत सिरसी में अतिथि सरपंच महोदय मंगला बाई पांचाल शिवराम गोपाल जी कन्नौज व रंजना बघेल के द्वारा भारत माता की फोटो पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरुआत की कार्यक्रम में सभी प्रशासनिक अधिकारी स्वास्थ्य विभाग आंगनवाड़ी विभाग आयुष विभाग शिक्षा विभाग व अन्य कर्मचारी गण उपस्थित होकर ग्रामीण जनों को अपने-अपने विभाग की सेवाएं प्रदान की कार्यक्रम को संबोधित करते हुए शिवराम गोपाल जी कन्नौज के द्वारा शासन की जन कल्याणकारी योजना की जानकारी दी गई और केंद्र सरकार द्वारा संचालित योजनाएं जन-जन तक पहुंचे सभी कर्मचारियों को प्रेरित किया गया साथ अपना स्वास्थ्य चेकअप भी करवाया गया कार्यक्रम में रथ के माध्यम से सभी को फिल्म दिखाकर योजना की जानकारी दी कार्यक्रम का संचालन नवीन जी अत्रे द्वारा किया गया कार्यक्रम में सभी अतिथियों का स्वागत सत्कार माल्यार्पण से किया गया कार्यक्रम में अजय जी राठौड़ सुरेश मेहसरीया मगनसिंह जी भाटिया संतोष पाटीदार एसडीम महोदय राहुल गुप्ता जनपद सीईओ भरत जाचपुरे जी ग्राम पंचायत सिरसी सचिव मगनसिंह जी रोजगार सहायक दीपक ग्राम सिरसी का भाजपा कार्यकर्ता राधेश्याम जी जाट सीताराम जाट जन अभियान परिषद सेक्टर प्रभारी सावन जाट राकेश जाट संजय पांचाल आदि अनेक प्रशासनिक अधिकारियों के साथ आमजन उपस्थित हुए कार्यक्रम का आभार भरत जांचपूरे जी ने व्यक्त किया।

सस्पेंड हुए जेई विद्युत को कायमगंज में फिर से तैनात करने की मांग

कायमगंज / फर्रुखाबादबिजली विभाग में कार्यरत रहे जेई के सस्पैंड होने के बाद कायमगंज में फिर से तैनाती की मांग हो रही है। नपा चेयरमैन व सभासद ने अधीक्षण अभियंता को पत्र लिखा है और पुनः तैनाती की मांग की है। वही एक्सईएन से हिज़ाम नेता भी मिले , उन्होंने साफ कहा यदि तैनाती नहीं हुई तो आमरण अनशन करेंगे।बीत दिनो बिजली विभाग के अधीक्षण अभियंता अजय कुमार ने कायमगंज बिजली निगम के जेई विजय शंकर को शिकायत के बाद सस्पेंड कर दिया था। इसको लेकर नगर पालिका अध्यक्ष डा. शरद कुमार गंगवार ने अधीक्षण अभियंता को पत्र लिखकर कहा है उनके समय में विद्युत बिल व बिजली व्यवस्था में सुधार हुआ था। उनकी कायमगंज में फिर से तैनाती की जाए। वही हिन्दू जागरण मंच के प्रदीप सक्सेना, अनूप चौबे, रिंकू कौशल, सतीश शर्मा, मयंक दुबे, भूरे यादव, अनिल कुमार, सानू सक्सेना, दिलीप कुमार, लखन सिंह, रामजी बिजली विभाग के एक्सईएन से मिले और एक पत्र सौपा। उन्होंने कहा जब उस जेई की तैनाती हुई थी , तब से आपूर्ति बेहतर हुई थी। उनका कहना है जब भी उन्हे काल की जाती थी तो फौरन समस्या का समाधान होता था। लेकिन अब ऐशा नहीं हो रहा है ।उन्होंने कहा यदि तत्कालीन जेई को चार्ज नहीं दिया गया तो हिजाम आमरण अनशन करेगा। इसकी जिम्मेदारी शासन प्रशासन की होगी।

संपादकीय

भारत को लेकर अमेरिका की चिंता

अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता के लिए बने अमेरिकी आयोग यूएससीआईआरएफ ने बाइडेन सरकार से अमेरिकी धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत भारत को श्विशेष चिंता वाला देशश घोषित करने का आह्वान किया है। यह आयोग 2020 से लगातार ऐसी ही मांग उठाते आया है। इस साल फिर आयोग ने कहा है कि भारत व्यवस्थित तरीके से लोगों की ध ार्मिक आजादी और आस्था को निशाना बना रहा है। इसलिए भारत को विशेष चिंता का देश नामित किया जाए। खास बात यह है कि इस बार भारत के लिए यह नकारात्मक टिप्पणी विदेशों में धार्मिक अल्पसंख्यकों को कथित रूप से निशाना बनाने का हवाला देते हुए की गई है। कुछ समय पूर्व कनाडा में खालिस्तान आंदोलन से जुड़े हरदीप सिंह निज्जर की हत्या और उसके बाद अमेरिका में इसी तरह गुरपतवंत सिंह पन्नू की हत्या की साजिश को आयोग ने चिंताजनक बताया है। हालांकि इन दोनों मामलों पर भारत की प्रतिक्रिया को लेकर विदेश मंत्री एस.जयशंकर ने कहा है कि जरूरी नहीं कि दोनों मुद्दे एक जैसे हों। उन्होंने कहा कि भारत एक ऐसा देश है जहां हम जो करते हैं जिम्मेदारी से करते हैं। अच्छी बात है कि भारत सरकार कहीं तो ये स्वीकार कर रही है कि वो जो करती है जिम्मेदारी से करती है। वर्ना पिछले कुछ सालों में तो यही दिख रहा है कि बड़े–बड़े फैसले बिना किसी जिम्मेदारी के लिए जा रहे हैं। नोटबंदी और लॉकडाउन जैसे फैसले इसकी मिसाल हैं, जिनमें लाखों लोग प्रभावित हो गए और फिर भी कहीं किसी की जिम्मेदारी नहीं तय हुई। अभी संसद पर इतने सनसनीखेज तरीके से घुएं का हमला किया गया, उस पर भी सरकार में बैठे जिम्मेदार लोग, जिम्मेदार तरीके से जवाब देने से बचते रहे हैं। अब कम से कम विदेश मंत्री ने जिम्मेदारी से काम करने की बात तो मानी है। इसके बाद अब विदेश मंत्री को इस बात का जवाब भी दे देना चाहिए कि आखिर क्यों अमेरिकी आयोग लगातार तीसरे साल भारत की धार्मिक स्वतंत्रता को लेकर चिंताजनक टिप्पणी कर रहा है। जिस तरह प्रेस की स्वतंत्रता से लेकर भुखमरी के आंकड़ों तक भारत हर अंतरराष्ट्रीय रैंकिंग को गलत बताता आया है, और इससे पहले अमेरिकी आयोग की धार्मिक स्वतंत्रता की रिपोर्ट को भी खारिज करता आया है, इस साल की रिपोर्ट को भी रद्दी की टोकरी में डाला जा सकता है। लेकिन अयोध्या के बाद मथुरा और काशी में अपने संकल्प को पूरा करने के लिए तैयार बैठी भाजपा क्या यह बताएगी कि आखिर साल दर साल एक जैसी ही चिंता क्यों व्यक्त की जा रही है। कहीं कोई चिंगारी सुलग तो रही है, जिसका धुआं अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नजर आने लगा है। अयोध्या में राम मंदिर तो बन कर लगभग तैयार हो ही चुका है, इस बीच पिछले साल काशी में ज्ञानवापी मस्जिद के सर्वे के लिए अदालती आदेश जारी हुआ था और अब मथुरा में कृष्ण जन्मभूमि–शाही ईदगाह मामले में कोर्ट की निगरानी में सर्वे कराने की मांग स्वीकार कर ली गई है। 1991 में लागू किया गया प्लेस ऑफ वर्शिप एक्ट अब अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है, जिसमें कानूनी प्रावधान है कि 15 अगस्त 1947 से पहले अस्तित्व में आए किसी भी धर्म के पूजा स्थल को किसी दूसरे धर्म के पूजा स्थल में नहीं बदला जा सकता। जब यह कानून बनाया गया था, उस वक्त किसी ने शायद कल्पना नहीं की होगी कि भारत को हिंदू राष्ट्र में तब्दील करने का उन्माद इतने व्यापक तौर पर असर दिखाने लगेगा। लेकिन 30 सालों में गंगा–जमुना में इतना पानी बह गया है कि गंगा–जमुनी संस्कृति भी वक्त की धार में खो गई है। अब जो जितनी नफरत के साथ राजनैतिक सौदेबाजी करेगा, वो उतना बड़ा नेता कहलाएगा। तो इस वक्तदेश में सत्ताधारी लोगों में बड़ा नेता बनने की होड़ लगी हुई है। केन्द्रीय मंत्री गिरिराज सिंह ने हलाल और झटके के मांस पर राजनीति करते हुए कहा है कि मैं उन मुसलमानों की प्रशंसा करता हूं जो केवल हलाल मांस ही खाते हैं। अब हिंदुओं को अपनी ध ार्मिक परंपराओं के प्रति इसी तरह की प्रतिबद्धता प्रदर्शित करनी चाहिए। गिरिराज सिंह ने कहा कि हत्या करने का हिंदू तरीका झटका है। इसलिए हिंदुओं को हमेशा झटका पर कायम रहना चाहिए। अब तक नवरात्रि और सावन के महीने में मीट की दुकानें बंद करने की मुहिम छेड़ी जाती थी। फिर कई जगहों पर धार्मिक स्थलों के आसपास मांस की दुकानें बंद करवाई गईं। जयपुर में मांसाहारी खाद्य वस्तुओं के ठेले बंद करवाने का अभियान छेड़ा गया, हालांकि पांच सितारा होटलों पर ऐसा कोई जोर नहीं दिखाया गया। और अब हलाल और झटके के मांस को लेकर राजनेता सलाह देने लगे हैं कि किसे क्या खाना चाहिए और क्यों खाना चाहिए। उधर असम में बीते बुधवार सरकार संचालित और सरकारी सहायता प्राप्त श्एमई मदरसोंश यानी मिडिल स्कूल मदरसों को तत्काल प्रभाव से सामान्य स्कूलों में बदलने का निर्देश दिया गया है, जिसके बाद राज्य के 1,281 मदरसे अब एम ई स्कूल कहलाएंगे, मदरसा नहीं। अरबी के शब्द मदरसा का अर्थ पाठशाला, विद्यालय या स्कूल ही होता है। लेकिन धर्म के नाम पर भेदभाव करने वाले लोग भाषा के भेद को समझ नहीं सके। उन्हें इस्लाम से ही नहीं, अरबी के शब्द से भी तकलीफ होने लगी। क्योंकि अपने संकुचित नजरिए में वे यह देख ही नहीं पाए कि मदरसा केवल धार्मिक शिक्षा तक सीमित नहीं होता है, जहां कहीं भी ज्ञान की शाला लगती है, वो मदरसा ही कहलाएगा। दरअसल असम में भाजपा सरकार ने 2021 में मदरसा शिक्षा–संबंधित दो अधि ानियमों को समाप्त करने के लिए एक कानून बनाकर सभी सरकारी और प्रांतीय मदरसों को बंद करने की प्रक्रिया शुरू की थी, तब हिमंता बिस्वासरमा शिक्षा मंत्री थे। अब वे मुख्यमंत्री हैं और उनकी सरकार मदरसों को बंद करने पर तुली है। भाजपा का तर्क है कि सरकारी पैसे पर धार्मिक शिक्षा नहीं दी जा सकती। लेकिन क्या यह तर्क सरस्वती शिशु मंदिर जैसे शिक्षा संस्थानों पर भी लागू होगा, यह विचारणीय है। बहरहाल, हलाल, झटका और मदरसा बनाम स्कूल तक के तमाम विवाद कपड़ों की पहचान के गुजरात मॉडल को ही अभिव्यक्त कर रहे हैं। जब तक सत्ता हाथ में है, तब तक इस बात की फिक्र क्यों की जाए कि भारत में बढ़ रही धार्मिक असहिष्णुता को लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कैसी छवि बन रही है।

उत्तर प्रदेश में विपक्ष का बड़ा राजनीतिक प्रदर्शन २० दिसंबर से

अरुण श्रीवास्तव

तीन हिंदी भाषी राज्यों में हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में अपनी करारी हार से सबक लेते हुए कांग्रेस नेतृत्व सावधानी से कदम बढ़ा रहा है। १६ दिसंबर को इंडिया गठबंधन की बैठक के ठीक बाद यह यात्रा विपक्ष के नेताओं को प्रेरित करने और उन्हें एक सार्वजनिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए महत्वपूर्ण कदम होगी।

भाजपा की कथित जनविरोध ी सरकार से छुटकारा पाने के लिए उत्तर प्रदेश कांग्रेस अब 20 दिसंबर को सहारनपुर के शाकंभरी देवी मंदिर से अपनी उत्तर प्रदेश जोड़ो यात्रा शुरू करेगी जो २५ दिनों तक चलने के बाद नैमिषारण्य (सीतापुर) में समाप्त होगी। इस दौरान यात्रा उत्तर प्रदेश के ७० पश्चिमी और मध्य जिलों के १६ संसदीय क्षेत्रों से होकर गुजरेगी। जाहिर तौर पर यह यात्रा कांग्रेस का शो है, लेकिन कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और पार्टी नेता राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा के अलावा वरिष्ठ विपक्षी नेता, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और समाजवादी पार्टी प्रमुख अखिलेश यादव, बिहार के उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव और कई वरिष्ठ विपक्षी नेता भी भाग लेंगे। तीन हिंदी भाषी राज्यों में हाल ही में संपन्न विधानसभा चुनावों में अपनी करारी हार से सबक लेते हुए कांग्रेस नेतृत्व सावधानी से कदम बढ़ा रहा है। १६ दिसंबर को इंडिया गठबंधन की बैठक के ठीक बाद यह यात्रा विपक्ष के नेताओं को प्रेरित करने और उन्हें एक सार्वजनिक कार्यक्रम में भाग लेने के लिए महत्वपूर्ण कदम होगी। आरएसएस द्वारा चुनावी प्रबंधन की कमान संभालने और रणनीति तैयार करने के साथ, कांग्रेस के लिए इंडिया ब्लॉक के घटकों को एक साथ लाने और आरएसएस की योजना को चुनौती देने की रोमांचकारी तात्कालिकता पैदा हो गई है। इसमें कोई संदेह नहीं कि भाजपा और नरेंद्र मोदी मगवा राजनीतिक पारिस्थितिकी तंत्र का सार्वजनिक चेहरा होंगे, मतपत्र की मुख्य लड़ाई आरएसएस द्वारा लड़ी जायेगी। भाजपा के चुनावी तंत्र पर अपनी मजबूत पकड़ बनाये रखने का आरएसएस का संकल्प इन राज्यों के मुख्यमंत्रियों के रूप में अपने तीन भरोसेमंद कैडरों को स्थापित करने की योजना में स्पष्ट रूप से प्रकट होता है, भले ही इन राज्यों में भाजपा को जीत दिलाने के लिए मोदी को श्रेय दिया जा रहा है। स्पष्ट राजनीतिक मजबूरियों के कारण आरएसएस नेतृत्व मोदी को दरकिनार करना पसंद नहीं करेगा, लेकिन तब यह उन्हें चुनावी रणनीतियों और तैयारियों में हस्तक्षेप करने की अनुमति भी नहीं देगा।हालांकि मोदी और अमित शाह को उत्तर प्रदेश में पार्टी के लिए रणनीतिकार माना जाता है और वे स्पष्ट रूप से राज्य के नेताओं के साथ बातचीत कर रहे हैं, यह आरएसएस नेतृत्व है जो दिशानिर्देश जारी कर रहा है और नीतियों और कार्यक्रमों को तैयार कर रहा है। यद्यपि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ आरएसएस कैडर नहीं हैं, संघ नेतृत्व उनकी नाव को बर्बाद करने को तैयार नहीं है। सत्ता विरोधी खतरे को खत्म करने के लिए आरएसएस ने जिला इकाइयों के पदाधिकारियों में फेरबदल और बदलाव का काम किया है। आरएसएस का मुख्य निशाना पश्चिमी उत्तर प्रदेश रहा है। संयोग से २०१३ के मुजफ्फरनगर दंगे के बाद आरएसएस ने इस क्षेत्र में एक मजबूत आधार हासिल कर लिया था। लेकिन हालिया किसान आंदोलन के मद्देनजर क्षेत्र में राजनीतिक परिदृश्य और समीकरण बदल गये हैं। जिन जाटों ने मुसलमानों पर खतरनाक हमले किये थे, वे अविश्वास के तत्व पर काबू पा चुके हैं और अब मुसलमानों के साथ अच्छे संबंध बना रहे हैं। जाटों ने भाजपा से नाता तोड़ लिया है। भाजपा के लिए बुरी खबर यह है कि हिंदू किसानों के एक बड़े वर्ग ने भाजपा की ओर से मुंह मोड़ लिया है। किसान आंदोलन के दौरान मरने वाले ६०० किसानों में से अधिकांश राज्य के पश्चिमी क्षेत्र के थे। यह भाजपा से हिंदू अलगाव का तत्व है जिसने कांग्रेस को उत्तर प्रदेश जोड़ो यात्रा को पश्चिमी यूपी में केंद्रित करने के लिए प्रेरित किया है। २०२४ के आम चुनाव पर नजर रखते हुए सपा, बसपा और कांग्रेस ने मुस्लिम वोटों को लुभाने की कोशिशें तेज कर दी हैं। फिर भी वे देश के राजनीतिक रुझान का अनुसरण करना पसंद कर सकते हैं और वे हो सकता है कि कांग्रेस के पीछे चल दें। कांग्रेस भाजपा को हरा सकती है, लेकिन राज्य से लोकसभा सीटें जीतने के लिए उसे हिंदुत्व को लेकर आरएसएस द्वारा शुरू किये गये मनोवैज्ञानिक युद्ध को हराना होगा। राज्य में जाति निर्णायक कारक रही है, लेकिन कांग्रेस नेतृत्व स्थानीय जाति क्षत्रपों तक पहुंचने में विफल रहा है। उत्तर प्रदेश में ५७ आरक्षित लोकसभा सीटें हैं जिनमें से अधिकांश पर दलित वोट बैंक का प्रभाव है। लेकिन सच तो यह है कि न तो समाजवादी नेता अखिलेश और न ही कांग्रेस ग्रामीण स्तर पर इस आबादी तक पहुंच पाई है। कांग्रेस के दलित नेता मल्लिकार्जुन खड़गे का जादू दलितों को कितना प्रेरित करेगा, यह अभी साफ नहीं है।२०२४ के चुनाव में दलित मतदाताओं का विश्वास जीतना, जो धीरे–धीरे मायावती और बसपा से दूर हो रहे हैं, विपक्षी दलों का प्राथमिक मिशन रहा है। योगी के सत्ता में आने के बाद पिछले सात सालों में भाजपा ने समाजवादी पार्टी और बीएसपी से कई दलित नेताओं को अपने पाले में कर लिया है। हाल के महीनों में अखिलेश अपने पीडीए (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्याक) नारे के जरिये दलित मतदाताओं को जोड़ने में सक्रिय हैं। लेकिन यह काम करता नजर नहीं आ रहा है। दलित यादवों के वर्चस्व को लेकर सशंकित हैं। दलित नेताओं को लगता है कि वे न तो समाजवादी पार्टी में और न ही भाजपा में स्वीकार्य हैं। उनसे बस दिखावा किया जाता है। कांग्रेस के साथ समस्या यह है कि वह इस उलझन में फंसी हुई है कि किसके साथ गठबंधन किया जाए– चाहे यह ऊंची जातियों के साथ हो या दलितों के साथ। दोनों के बीच घोर विरोधी संबंध हैं। वह स्थानीय दलित नेताओं द्वारा गठित विभिन्न छोटे दलित उन्मुख दलों के साथ तालमेल को लेकर भी उलझन में है। एक बात बिल्कुल स्पष्ट है कि कांशीराम की विरासत पर कब्जा किया जा रहा है। सभी दल उन्हें और उनकी विचारधारा को पहचानने का प्रयास कर रहे हैं। ६ अक्टूबर को कांग्रेस ने उनके आदर्शों पर केंद्रित श्दलित गौरव यात्राश शुरू की। सपा भी बाबासाहेब अंबेडकर और कांशीराम दोनों का आह्वान करते हुए संविधान बचाओ जन चौपाल आयोजित कर रही है।

मी लार्ड फैसला मिला है, पर न्याय नहीं मिला!

राजेंद्र शर्मा

2019 के अगस्त में शुरू में जम्मू–कश्मीर के संबंध में केंद्र सरकार ने जो विवादास्पद कदम उठाए, उनकी कानूनी संवैध ानिक वैधता पर उस समय संसद में तथा संसद के बाहर भी गंभीर सवाल उठे थे और उसी आधार पर इन कदमों को सुप्रीम कोर्ट में कई राजनीतिक तथा सामाजिक–नागरिक अधिकार संगठनों की ओर से चुनौती भी दी गई थी। बहरहाल, कानूनी वैधता पर विवाद के विपरीत, मोदी सरकार के उक्त कदमों के संबंध में एक बात निर्विवाद थी। ये कदम सत्ताधारी भाजपा और उससे भी बढ़कर उसके मातृ संगठन, आरएसएस के बुनियादी लक्ष्यों में से एक को पूरा करने वाले कदम थे। कश्मीर को विशेष दर्जा देने वाली, संविधान की धारा–370 को खत्म कराना, स्वतंत्रता की शुरूआत से ही आरएसएस के और उसके द्वारा खड़ी की गई राजनीतिक पार्टियों, पहले जनसंघ और आगे चलकर भाजपा के मूल एजेंडे पर रहा था। अगर सवा चार साल पहले, भाजपा की प्रबल बहुमत की सरकार ने, आरएसएस के इस पुराने एजेंडे को पूरा कर दिया था, तो अब सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने, मोदी सरकार के उक्त कदमों पर वैधता की मोहर लगाकर, आरएसएस के उक्त एजेंडे के पूरे किए जाने को, तथाकथित अमृतकाल के भारत की नियति बना दिया है।कहने की जरूरत नहीं है कि देश को बलपूर्वक इस दिशा में धकेले जाने की समस्या सिर्फ यह नहीं है कि यह दिशा आरएसएस के एजेंडे की है। समस्या यह है कि यह दिशा, इस देश के स्वतंत्रता संघर्ष की मूल दिशा से उल्टी है। स्वतंत्रता संघर्ष की उस मूल दिशा ने ही इसका रास्ता बनाया था कि इस्लाम के नाम पर भारत से अलग होकर पाकिस्तान के बनने और ज्यादातर लगते हुए मुस्लिम बहुल इलाके पाकिस्तान में जाने के बावजूद, सीमाएं लगने के बावजूद मुस्लिम बहुल जम्मू–कश्मीर कानूनन भारत के साथ बना रहा है और उसका बड़ा हिस्सा आज भी भारत के अधिकार में है। आरएसएस के एजेंडे की मूल दिशा, जो जम्मू–कश्मीर की इस बहुसंख्यक आबादी के प्रति वैरभाव पर आधारित है, इस नाजुक रिश्ते को उधेड़ने का ही काम कर सकती है, फिर चाहे एक भूभाग के रूप में उसके कितने ही बड़े हिस्से पर बलपूर्वक नियंत्रण रखना क्यों न संभव हो। इसलिए, भारत की स्वतंत्रता के संघर्ष के बीच से निकली, स्वतंत्र भारत की मूल संकल्पना की परवाह करने वाला कोई व्यक्ति अगर बरबस, बाबरी मस्जिद विवाद में सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय बैंच के ही फैसले के बाद चलन में आई इस उक्ति को एक बार फिर दोहराए तो हैरानी की बात नहीं होगीकृमी लार्ड, फैसला मिला है, न्याय नहीं! न्याय नहीं मिलने के दो पहलू हैं, जो आगे चलकर आपस में जुड़ जाते हैं। पहला तो यही कि धारा–370 के निरस्त किए जाने को वैध ठहराते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने उस विशिष्ट रिश्ते की ओर से आंखें ही मूंद रखी हैं, जिसकी अभिव्यक्ति इस धारा की विशिष्ट व्यवस्था में हो रही थी। इसी का नतीजा सुप्रीम कोर्ट के फैसले में इस दावे के रूप में सामने आता है कि जम्मू–कश्मीर के भारतीय संघ के साथ विलय की संधि पर हस्ताक्षर किए जाने के बाद, उसकी कोई श्आंतरिक संप्रभुताश नहीं रह गई थी। और इसलिए, संप्रभुता के इकलौते आसन के रूप में भारतीय संघ को, अपने अंग के रूप में उसके लिए निर्णय लेने के समस्त अधिकार हैं, जिसमें धारा 370 को खत्म करना भी शामिल है। लेकिन, संप्रभुता की यह नितांत एकात्मवादी अवधारणा है, जबकि भारतीय संविधान में स्थापित संघीय व्यवस्था, संप्रभुता की एक बहुपरतीय अवधारणा की मांग करती है, जहां स्वायत्तता के रूप में संप्रभुता के तत्व दूर तक बिखरे रहते हैं। राज्यों के अधिकारों की विस्तृत व्यवस्था पर आधारित भारतीय संघीय व्यवस्था, संप्रभुता के तत्वों के इसी बिखराव की अभिव्यक्ति है। धारा–371 के अंतर्गत उत्तर–पूर्व के अनेक राज्यों में तथा अन्य कई राज्यों में भी, संघीय शासन के बरक्स स्थानीय शासन को दिए गए विशेषाधिकार, इसी का एक और स्तर हैं। धारा–370 इसी के एक और स्तर को अभिव्यक्त करती थी, जिसमें इस रूप में इसकी अनुल्लंघनीयता की गारंटी भी जोड़ी गई थी कि इसका अनुमोदन करने वाली जम्मू–कश्मीर की संविधान सभा के अनुमोदन से ही, इसे बदला जा सकता था। यह एक पवित्र वादे की अभिव्यक्ति थी, जो भारतीय संघ की ओर से विलय के समय, जम्मू–कश्मीर की जनता से किया गया था। लेकिन, 2018 में राज्य में राज्यपाल/राष्ट्रपति शासन लगाकर, विधानसभा के भंग किए जाने के जरिए, कपटपूर्वक इस वादे को तोड़े जाने का रास्ता तैयार किया गया, जिस पर अदालत ने इसलिए अनुमोदन की मोहर लगा दी है कि उसकी नजर में ऐसा करना उस संप्रभुता के दायरे में था, जिसका एकमात्र संघ में ही वास है। संप्रभुता की इसी सीमित करने वाली अवधारणा का विस्तार कर, मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता में, पांच सदस्यीय संविधान पीठ इस मनमाने निष्कर्ष पर पहुंची कि संविधान की धारा, जम्मू–कश्मीर के भारत से श्पूर्ण–एकीकरणश के लिए की गई एक श्अस्थायीश व्यवस्था थी और इसलिए, उसका खत्म होना उसके अस्तित्व के उद्देश्य के ही पूरा होने का सूचक है। धारा 370 के खत्म किए जाने के लिए, इस धारा को ही दलील बनाए जाने से, ऊटपटांग चीज दूसरी नहीं हो सकती है।न्याय नहीं मिलने का दूसरा पहलू, मोदी सरकार के जम्मू–कश्मीर का राज्य का दर्जा खत्म करने और उसे दो केंद्र शासित क्षेत्रों में बांटने के निर्णय से संबंधित है। राज्य का दर्जा खत्म करने और उसे टुकड़ों में बांटने का यह निर्णय, इसके बावजूद लिया गया था कि उस समय जम्मू–कश्मीर विधानसभा अस्तित्व ही नहीं थी जबकि संघीयता के तकाजों के आधार पर संविधान इसकी स्पष्टड्ड व्यवस्था करता है कि संघ के हिस्से के रूप में किसी राज्य के दर्जे या उसकी सीमाओं में बदलाव के लिए, संघ का प्रस्ताव राष्ट्रपति द्वारा राज्य की राय हासिल करने के लिए उसे भेजा जाना आवश्यक है, भले राज्य की राय राष्ट्रपति के लिए बाध्यकर नहीं होती है। इस मामले में कपटपूर्वक इस मामले में राज्य की राय के स्थानापन्न के रूप में राज्यपाल की राय को रख दिया गया, जो निर्विवाद रूप से संघीय सरकार का एजेंट होता है। विचार करने का प्रश्न यह था कि क्या केंद्र को इसकी इजाजत दी जा सकती है कि, अपने ही एजेंट की राय को, राज्य की राय बनाकर, राज्यों के साथ अपनी मनमानी का रास्ता बना ले। दुर्भाग्य से सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय संविधान पीठ ने इस प्रश्न को सीधे संबोधित करने से बचने का ही रास्ता ही अख्तियार किया। उल्टे उसने पूरे मामले में विचार कर कोई निर्णय देने से ही इस बहाने से इंकार कर दिया कि संघ सरकार की ओर से यह वादा किया गया था कि जम्मू–कश्मीर का राज्य का दर्जा बहाल कर दिया जाएगा। इसलिए, इस प्रश्न पर विचार करने की जरूरत ही नहीं रह जाती है! लेकिन, इस मामले में विवाद में न जाने की अदालत की उत्सुकता इतनी प्रबल थी कि उसने वादा करने वाले संघीय शासन से यह तक जानने की जरूरत नहीं समझी कि राज्य के दर्जे की बहाली कब की जाएगी? उल्टे, उसी फैसले में उसने मोदी सरकार के उन्हीं कदमों के क्रम में, जम्मू–कश्मीर को तोड़कर, लद्दाख को केंद्र शासित क्षेत्र बनाए जाने को वैध ा भी, ठहरा दिया। यानी कुल मिलाकर, एक राज्य को उसकी राय लिए बिना टुकड़ों में बांटे जाने को उसी अदालत ने वैध ठहरा दिया, जिसने ऐसा किए जाने की वैधता को दी गई चुनौतियों पर विचार कर इस पर संवैधानिक व्यवस्था स्पष्टड्ड करने की जरूरत नहीं समझी। एक नजीर के रूप में, सुप्रीम कोर्ट के फैसले का यह पहलू, जम्मू–कश्मीर के साथ जो कुछ करता है, उसके अलावा देश की संघीय व्यवस्था मात्र के लिए गंभीर खतरे का रास्ता खोल देता है। इस तरह तो कोई संघीय शासन अपनी मर्जी से पहले किसी राज्य पर राष्ट्रपति शासन लगाकर और इस तरह से वहां अपने एजेंट के रूप में राज्यपाल को राज्य की राय का स्थानापन्न बनाकर, इस कपटचाल के जरिए आसानी से किसी राज्य का दर्जा घटा सकता है, उसे तोड़ सकता है, उसकी सीमाओं को बदल सकता है या उसके क्षेत्र का किसी दूसरे राज्य में विलय कर सकता है।

राष्ट्र की उन्नति में शिक्षा,ज्ञान की भूमिका

संजीव ठाकुर

यह सर्वविदित है कि इतिहास का पन्ना पलटें तो हर सभ्यता ने अपने कई कई रूप बदले हैंस संस्कृति ने नए नए नए आयाम का सृजन किया हैंस वैसे भी जीवन परिवर्तन का पर्याय है एवं विकास का स्वरूप हैस यह सर्वकालीन सत्य है कि शिक्षा एवं ज्ञान का महत्व हर संस्कृति, सभ्यता और मानवीय समुदाय के जीवन में एक प्रकाश पुंज की तरह उन्हें विकास की दिशा दिखाते हुए आया हैस जिस देश की भाषा जितनी समृद्ध होगी उस देश की सभ्यता संस्कृति और ज्ञान उत्तम शिखर पर होगा और विकास की नई नई धाराएं बहेगीस मानवीय विकास के साथ मनुष्य को अधिक परिपक्व को समझदार तथा समृद्ध बनाने में शिक्षा,भाषा, ज्ञान और साहित्य का सर्वाधिक महत्व रहा हैस शिक्षा चाहे आपके परिवार से प्राप्त हुई हो, स्कूल कॉलेज अथवा किसी शिक्षण संस्थान से प्राप्त हुई हो या भारतीय संस्कृति के वैदिक शास्त्रों से प्राप्त हुई हो, शिक्षा का मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में बड़ी अहम भूमिका होती हैस शिक्षा भी समाज संस्कृति एवं सभ्यताओं के साथ परिवर्तनशील तथा प्रगतिशील है। शिक्षा, ज्ञान तथा संस्कृति और कला साहित्य को देश और विदेश की सीमाओं में बांधा नहीं जा सकता है। यह असीमित भंडार है एवं इसमें आकाशीय ऊंचाइयां भी शामिल रहती हैंस शिक्षा और ज्ञान न तो गहराइयां न ही नापी नजा सकती है, और ना ही इसकी ऊंचाई को देखा जा सकता है। पूर्वी सभ्यता जहां अध्यात्म, वेद ,पुराणों पर अवलंबित है, वहीं पश्चिमी सभ्यता ज्ञान विज्ञान नए नए अविष्कार और आकाश की अनछुई कई बातों को उजागर करने वाली है। ऐसी शिक्षा तथा ज्ञान के कारण मानव चंद्रमा पर पहुंच कर एक नई गाथा लिख पाया हैस वस्तुतः पूर्व तथा पश्चिम ज्ञान विज्ञान तथा शिक्षा के मामले में एकाकार हो चुका है कोई भी भेदभाव या विभाजन रेखा नहीं खींची जा सकती हैस पूरी सभ्यता ने जहां पाश्चात्य दर्शन से नए नए अविष्कारों हवाई जहाज, इंजन, ग्रामोफोन, रेडियो एवं नई नई टेक्नोलॉजी को अपनाया है वहीं पश्चिमी दर्शन ने भारती ज्ञान विज्ञान संस्कार आयुर्वेद योग धर्म दर्शन को अपना कर अपनी जीवनशैली में शांति तथा सौभाग्य स्थापित किया हैस यह सब शिक्षा भाषा एवं ज्ञान के बदौलत पूर्व और पश्चिम का मेल संभव हो पाया हैस शिक्षा और भाषा सदैव ही अज्ञानता के तमस में एक प्रकाश पुंज की तरह देदीप्यमान होता रहा है, नवजीवन की विकास धारा में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता आया हैस हमारे कई धर्मों में जिनमें जैन ,बौद्ध दर्शन, नव्य वेदांत तथा भारतीय संस्कृति के नवीन चिंतन के सामने आने से नवयुग की कल्पना को साकार किया है। पश्चिम के कई विद्वान और चिंतक जिनमें प्लूटो, अरस्तु, सुकरात, कार्ल मार्क्स, लेनिन ने अनेक विकास के सिद्धांतों को प्रतिपादित किया है। जिसका पूरे विश्व ने खुले दिल से स्वागत किया एवं विकास की नई नई की इबारत लिखी है। दूसरी ओर भारत की संस्कृति, सभ्यता और समाज में सदैव आवश्यक सुधार तथा नई नई बुद्धिमता पूर्ण युक्तियों को अपने में आत्मसात करने की एक अलग क्षमता रही है, और विकास का मूल मंत्र भी परिवर्तनशील जीवनशैली ही है स राजनीति तो सदैव परिवर्तन पर अवलंबित रहती है। स्वतंत्रता के पहले तथा बाद में राजनीतिक घटनाक्रम जिस नव परिवर्तन युग की तरफ अग्रसर हुए हैं वह अत्यंत उल्लेखनीय हैस भारतीय सभ्यता समाज और संस्कृति जितनी जटिल तथा गूढ़ है उसको जितना समझा जाए, उसका जितना अध्ययन किया जाए तो उससे नवीन बातें समझ में आती है, और उसके नए नए अर्थ हमारे सामने आते हैं, जिसका बहु आयामी उपयोग हम अपनी जीवनशैली में परिवर्तन करने के लिए सदैव कर सकते हैं।

विषम परिस्थितियों में भी धैर्य एवं सकारात्मक सोच के साथ आगे बढे

तनावमुक्त होकर आनंद व खुशी से जीये- एसडीएम श्री गाचले

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो पुष्पांजलि टुडे
राज्य आनंद संस्थान आनंद विभाग का एक दिवसीय अल्प विराम कार्यक्रम आज 21 दिसंबर को डाइट कालेज बीटीआई. में आयोजित किया गया। आनंद विभाग डिस्ट्रिक्ट प्रोग्राम लीडर केबीबमंसारे ने आनंद विभाग का परिचय व गतिविधियों की जानकारी दी। कार्यक्रम के दौरान परिचयात्मक विडियो फिल्म दिखाई। टूल्स के माध्यम से मास्टर ट्रेनर्स ने प्रतिभागियों को आनंद पूर्ण जीवन जीने के अनुभव के साथ कला सिखाई। मुख्य अतिथि खरगोन एसडीएम श्री भास्कर गाचले ने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में हर व्यक्ति तनाव महसूस कर रहा और परिस्थितियों को बदलने का प्रयास करता है यदि हम खुद को बदल लें तो आनंद पूर्ण जीवन जी सकते हैं।सत्र के आरंभ में मास्टर

ट्रेनर सुश्री दिप्ती ठाकुर ने आनंद की ओर सत्र तीन प्रश्नों के साथ लिया। मास्टर ट्रेनर श्री गणेश कानड़े ने लाइफ बैलेंस शीट सत्र लिया। पांच मिनिट का शांत दिया। विचार रखते समय प्रतिभागी भाव विभोर हुए, जीवन की घटनाए ताजा हुई। प्रियंका वर्मा, मनिषा डावर, ऋषिका भावसार ने विचार रखे। उन्होंने चार प्रश्नों के माध्यम से अपने जीवन की लाइफ बैलेंस शीट तैयार नहीं करने को कहा। मास्टर ट्रेनर नारायण फरकले ने फ्रीडम ग्लास विधि के माध्यम से अपने जीवन में बदलाव की स्टोरी शेयर की। रमेश चक्रवर्ती ने सभी प्रतिभागियों के आनलाइन पंजीयन किए। कार्यक्रम के समापन पर डाईट प्राचार्य रश्मी मेहता प्रशिक्षको ने प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र भेंट किए। इस अवसर पर प्रतिभा दुबे, श्वेता पंडित, जगदीश पाटीदार, विठ्ठलदास महाजन, बलीराम पटेल उपस्थित थे।

सावित्रीबाई फूले स्वसहायता समूह योजना महिलाएं करें आवेदन

खरगोन जिले से मुन्ना खान ब्यूरो पुष्पांजलि टुडे
अनुसूचित जाति वर्ग की महिलाओं के लिये वित्तिय वर्ष 2022-23 के लिए संचालित योजना में खरगोन जिले को लक्ष्य प्राप्त हुए है। वित्तिय वर्ष 2022-23 में केवल महिलाओं के लिये सावित्रीबाई फूले स्वसहायता समूह योजना में 09 का लक्ष्य प्राप्त हुए हे। इस योजना में 520 हजार से 01 लाख रुपये तक उद्योग, सेवा ईकाई एवं खुदरा व्यवसाय के लिए होगा।योजना में लाभ प्राप्त करने के लिए समूह की महिला सदस्य अनुसूचित जाति वर्ग से हो। उन्हें सक्षम प्राधिकारी द्वारा जारी प्रमाणपत्र संलग्न करना अनिवार्य होगा। सदस्य की आयु 18-55 वर्ष के मध्य होनी चाहिए। समूह के सदस्य की वार्षिक आय शहरी क्षेत्र में रूपये 55 हजार रुपए एवं ग्रामीण क्षेत्र में 40 हजार रुपए से अधिक नहीं होनी चाहिए। मध्यप्रदेश का मूल

निवासी हो। एक परिवार से एक ही सदस्य पात्र होगा। अनुदान 10 हजार रूपये प्रति व्यक्ति देय होगा। योजना का लाभ केवल नवीन उद्योग, सेवा क्षेत्र एवं व्यवसाय के लिए देय होगा। इच्छुक आवेदक कार्यालय जिला अंत्यावसायी खरगोन से ऋष्टा आवेदन पत्र प्राप्त कर सकते है। वही जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र परिसर, पुराना कलेक्ट्रेट खरगोन से अधिक जानकारी के लिये संपर्क कर सकते है।

आरबीएस टीम 1 के द्वारा बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण

अंबेडकर नगर से ब्यूरो चीफ रामदयाल गौतम की रिपोर्ट
अंबेडकर नगर जिले के जलालपुर ब्लॉक में मालीपुर मिनी आंगनवाड़ी केंद्र पर आरबीएस 1 टीम के द्वारा छोटे बच्चों का स्वास्थ परिक्षण किया गया मालीपुर मिनी आंगनवाड़ी केंद्र की कार्यकत्री मंजू देवी ग्राम सभा मालीपुर टूटाहवा में नगपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र जलालपुर अंबेडकर नगर के चिकित्सकों द्वारा- डॉ अजीत सर, डॉक्टर पीके सिंह जी ,रामवती जी, अपनी टीम के साथ मालीपुर के मिनी आंगनबाड़ी केंद्र पर बच्चों का अच्छे से स्वास्थ परिक्षण किया गया जिसमें मौजूद रहे बच्चे गुनगुन, बुलबुल, अभय ,अनामिका, रुनझुन, आराध्या, वैष्णवी, आंसू ,नितेश ,रजनी, शिवांगी, अभय, आयांश, छोटी, आदि तमाम बच्चे मौजूद रहे बच्चों को परेशानी के हिसाब से दवा का वितरण भी किया गया

चंदाहरा गांव के पास गोहद धमसा रोड पर कार की टक्कर से घायल एक व्यक्ति की हुई मौत

दैनिक पुष्पांजली टुडे
गोहद ।गोहद धमसा मार्ग पर सड़क दुघर्टना में घायल व्यक्ति की मौत हो गई फरियादी बृजेश अर्गल पुत्र श्री रामस्वरूप अर्गल उम्र 32 साल निवासी ग्राम भगवासा ने पुलिस को बताया कि दिनांक 20.12.2023 को राकेश उर्फ रोशन पुत्र रामस्वरूप अर्गल उम्र 40 साल व भाई मुकेश अर्गल व उमेश खरे खाद लेने गोहद गये थे खाद न मिलने से वापस गांव भगवासा जा रहा था शाम के समय जैसे ही हम लोग सिरसौदा व भ्यानी के बीच पहुंचे तभी पीछे से कार नंबर स्क्क07ष्ठक्क4150 का चालक गाड़ी को बड़ी तेजी व लापरवाही पूर्वक चलाकर लाया और पीछे से टक्कर मार दी जिससे वह सड़क पर गिर पड़ा मैंने उठा कर देखा तो राकेश उर्फ रोशन अर्गल के सिर में व सीने में मूंदी चोट थी गाड़ी का चालक गाड़ी को भगा कर भ्यानी तरफ ले गया फरियादी राकेश अर्गल को अस्पताल गोहद लेकर गये। जहाँ डॉंक्टर ने ग्वालियर रेफर कर दिया। इसी दौरान रास्ते में मृत्यु हो गयी गोहद पुलिस ने मर्ग कायम कर शव? का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंपा

वार्ड क्रमांक 11 की भाजपा पार्षद नीलम बघेल ने अपने ही सरकार के खिलाफ खोला मोर्चा

वार्ड की मूल भूत सुविधाओं को लेकर वार्ड की महिलाओं के साथ किया नगर पालिका के गेट पर लगाया ताला

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे
शिवपुरी - शिवपुरी नगर पालिका परिषद के वार्ड क्रमांक 11 की भाजपा पार्षद नीलम बघेल ने अपनी ही सरकार के खिलाफ मोर्चा खोल दिया है। उन्होंने वार्ड की समस्याओं के निराकरण न होने के चलते नगर पालिका परिषद के मुख्य दरवाजे पर तालाबंदी कर धरना प्रदर्शन किया। इस दौरान पार्षद के साथ दर्जनों महिलाएं भी आई थी, वहां पहुंचकर इन्होंने नगर पालिका मुर्दाबार के नारे लगाए।बता दें कि तालाबंदी के दौरान भाजपा की ओर से चुनी गई निर्विरोध नपा अध्यक्ष गायत्री शर्मा को नगर पालिका परिसर में कैद होकर रहना पड़ा। पार्षद और महिलाओं के हंगामे को देखते हुए पुलिस ने भी मोर्चा संभाल लिया गया।

पार्षद ने लगाए नपा पर सुनवाई न होने के आरोप, बोलीं- जनता परेशान वार्ड 11 की भाजपा पार्षद नीलम बघेल ने बताया कि वह चार बार से पार्षद हैं। उनके वार्ड की जनता सड़क, पानी, गंदगी से परेशान है। लगातार वार्ड वासियों के द्वारा परेशानियों से निजात दिलाए जाने की फ़रियाद लगाई जा रही है। इसके बावजूद **नगर पालिका प्रबंधन-** हाथ पर हाथ रखे बैठा है। उनके यहां एक माह से दोहाथ पर हाथ रखे बैठा है। उनके यहां एक माह से दो पानी के बोरवेल खराब पड़े है लेकिन अब तक उन्हें ठीक नहीं कराया गया है, जब तक वार्ड में पानी की सप्लाई टैंकर से कराने की मांग की गई थी लेकिन उनकी यह सुनवाई भी नपा प्रबंधन द्वारा नहीं की गई। एक दो दिन सिंध जलवर्धन योजना के तहत सप्लाई होती है फिर दो माह के लिए बंद हो जाती है। जबकि पानी के बिल बराबर वसूले जा रहें है।

तीन बार हुआ सड़कों का भूमि पूजन, लेकिन निर्माण कार्य नहीं हो सका शुरू-भाजपा पार्षद नीलम बघेल ने नपा प्रबंधन पर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके वार्ड की महाराणा कॉलोनी में एक सड़क का भूमि पूजन नपा द्वारा करवा दिया गया है। लेकिन अब तक सड़क निर्माण का कार्य शुरू नहीं किया है। इधर नपा प्रबंधन भी पैसा न होने से सड़क निर्माण न हो सकने की बात कहकर अपना पल्ला झाड़ लेता है। नपा अध्यक्ष ने तमाम सड़कों के भूमिपूजन कर छोड़ दिया है लेकिन निर्माण के कार्य को शुरू नहीं किया गया।पार्षद नीलम बघेल का कहना वह पीआईसी मेंबर हैं नगर पालिका में कमीशन खोरी का खेल चल रहा है। नपा का संचालन नपा अध्यक्ष के पति द्वारा किया जा रहा है। निर्माण कार्य और कई फाइलें पहले नपा अध्यक्ष पति के पास पहुंचती है इसके बाद उन्हें स्वीकृति मिलती है। आज नपा के कई पार्षद और महिला पार्षद के पति नगर पालिका में ठेकेदारी कर रहे हैं।सुबह से शुरू हुआ धरना प्रदर्शन दोपहर तक चलता रहा, वहीं कुछ भाजपा पार्षद और कांग्रेस के पार्षद ने धरने का समर्थन किया, तो वहीं कुछ पार्षदों ने धरने से दूरी बनाकर रखी जिनको पार्षदी के साथ ठेकेदारी मिल गई वह सभी पार्षद धरना प्रदर्शन से दूर रहे।

नपा अध्यक्ष बोलीं- समस्या नहीं बताई थी कैसे होती सुनवाई-इस मामले में नगरपालिका अध्यक्ष गायत्री शर्मा ने अपनी बात को सीमित रखते हुए कहा कि बोरवेल के खराब होने की सूचना पार्षद द्वारा नहीं दी गई थी आज उन्हें पता लगा है, आज शाम तक बोरवेल की ठीक करा दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त सड़क निर्माण न करने बाले ठेकेदारों के खिलाफ कार्रवाई कर फिर टेंडर जारी कर सड़क का निर्माण कार्य पुनः कराया जाएगा ओर जो ठेकेदार बार बार टेंडर डाल कर सड़को का निर्माण नही करते उनको ब्लैक लिस्ट किया जाएगा

लोकसभा एवं राज्यसभा के 142 सांसदों के निलंबन के विरोध में कांग्रेस का 22 को विरोध प्रदर्शन

जिला कांग्रेस कमेटी द्वारा 12 बजे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा गोल मार्केट पर एकत्रित होकर विरोध प्रदर्शन किया जाएगा

दैनिक पुष्पांजली टुडे
भिण्ड । जिला कांग्रेस कमेटी जिलाध्यक्ष मान सिंह कुशवाह द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव के .सी. वेणुगोपाल सांसद द्वारा पत्र क्रमांक ओआरजी 7 / 1523 दिनांक 19 दिसंबर 2023 में दिए गए निर्देशों के परपालन में केंद्र की भाजपा सरकार ने लोकतंत्र पर अभूतपुर्व हमला किया। आश्चर्यजनक रूप से संसद के दोनों सदनों से 142 सांसदों को निलंबित कर दिया गया है। केंद्र की भाजपा सरकार का यह घिनौनाकृत है, इंडिया एलाइंस पार्टियों की बैठक में भी सभी ने सर्वानुमति से निर्णय लिया कि दिनांक 22 दिसंबर 2023 को केंद्र की भाजपा सरकार द्वारा 142 सांसदों की निलंबन के विरोध में जिला स्तर पर विरोध प्रदर्शन किया जाना है, सभी का यह दायित्व है,कि लोकतंत्र के इस अपमान के खिलाफ एक साथ खड़े होने की जरूरत है, जिसमें प्रदेश एवं जिला पदाधिकारीगण, जिला के सभी मोर्चा संगठनो के अध्यक्षगण,सभी विभागों के अध्यक्ष एवं सभी प्रकोष्ठों के अध्यक्षगण,एवं सभी पदाधिकारीगण, सभी ब्लॉक अध्यक्षगण,विधायक,पूर्व विधायक एवं वरिष्ठ कांग्रेसजनों एवं समस्त कार्यकर्ताओ से अनुरोध है,कि गोल मार्केट राष्टपिता महात्मा गांधी जी की प्रतिमा पर 12 बजे उपस्थित होकर कार्यक्रम को सफल बनाएं।

विश्व प्रसिद्ध पखावज वादक राधेश्याम शर्मा आज तानसेन समारोह में देंगे अपनी प्रस्तुति

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे
शिवपुरी- 99वां विश्व प्रसिद्ध संगीत समागम कार्यक्रम तानसेन समारोह पूर्वरंग गमक का आयोजन किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में विश्व प्रसिद्ध पखावज वादक राधेश्याम शर्मा नई दिल्ली द्वारा अपनी शानदार प्रस्तुति दी जायेगी। 22 दिसम्बर (शुक्रवार) को सांय 06 बजे टाउन हॉल, पोलो ग्राउंड के सामने शिवपुरी में 99वां विश्व संगीत समागम तानसेन समारोह पूर्वरंग गमक का आयोजन किया जा रहा है।कार्यक्रम में सुश्री स्मिता मोकाशी इंदौर गायन, बसंत शर्मा एवं विठ्ठल राजपुरा इंदौर सरोद पर अपनी प्रस्तुति देंगे और सरोद एवं पखावज की जुगलबंदी से श्रोताओं को आनंदित करेंगे। इनके साथ तबले पर सुश्री संगीता अग्निहोत्री एवं सारंग लासुरकर, रहेंगे। हारमोनियम पर रचना शर्मा एवं सारंगी पर अब्दुल हमीद रहेंगे। इसके साथ ही तिरूपति संगीत कला महाविद्यालय शिवपुरी द्वारा सरस्वती वंदना की प्रस्तुति होगी। शिवपुरी से ममता आकांक्षा गौ? एवं अणिमा अस्थाना का गायन भी किया जाएगा।कार्यक्रम के नोडल अधिकारी उमराव सिंह मरावी द्वारा बताया गया कि इस समारोह से शिवपुरी की संगीत प्रेमी जनता को न केवल संगीत का आनंद प्राप्त होता है बल्कि स्थानीय कलाकारों को भी प्रोत्साहन मिलता है। मध्यप्रदेश शासन संस्कृति विभाग के लिए जिला प्रशासन शिवपुरी भारतीय पुरातत्व सर्वक्षण भोपाल मण्डल तथा जिला पुरातत्व पर्यटन एवं संस्कृति परिषद शिवपुरी के सहयोग से उस्ताद अलाउद्दीन खां संगीत एवं कला अकादमी मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद, भोपाल का प्रतिष्ठा आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने शिवपुरी के समस्त नागरिकों से अधिक से अधिक संख्या में कार्यक्रम स्थल पर समय पर पहुंचाने का अनुरोध किया है, कार्यक्रम में प्रवेश निःशुल्क है

सर्किल जेल शिवपुरी में विधिक साक्षरता शिविर संपन्न

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे
शिवपुरी- राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण नई दिल्ली एवं म.प्र. राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण जबलपुर के आदेशानुसार तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश राजेन्द्र प्रसाद सोनी के निर्देशन में विशेष न्यायाधीश शिवपुरी वंदना जैन एवं जिला न्यायाधीश/सचिव अर्चना सिंह ने गुरुवार को सर्किल जेल शिवपुरी का निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के दौरान प्रत्येक बैरिक में जाकर बंदियों से उनके प्रकरणों के संबंध में चर्चा की गई जैसे विचारण की स्टेज, यदि सजा हुई है तो अपील की स्थिति, जमानत आवेदन एवं निशुल्क विधिक सहायता आदि के संबंध में पूछताछ की।साथ ही बंदियों को प्रदाय किये जाने वाले भोजन, पानी स्वास्थ्य, मनोरंजन, शिक्षा, मुलाकात आदि

प्रावधानों के संबंध में चर्चा की गई। तत्पश्चात सर्किल जेल में विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें उपस्थित बंदियों को विशेष न्यायाधीश वंदना जैन के द्वारा जेल अपील के प्रावधानों के बारे में बताया गया। साथ ही जिला न्यायाधीश/सचिव अर्चना सिंह के द्वारा निशुल्क विधिक सहायता, बंदियों के अधिकार एवं उन्हें मिलने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी दी। शिविर के दौरान मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट शिवपुरी सज्जन सिंह सिसौदिया के द्वारा प्ली बार्गेनिंग प्रक्रिया के प्रावधानों आदि के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी प्रदान की गई।इस अवसर पर न्यायिक मजिस्ट्रेट दिव्यानी सिंह, वंशिता गुप्ता, जिला विधिक सहायता अधिकारी डॉ.वीरेन्द्र कुमार चड़ार, जेल अधीक्षक रमेशचंद्र आर्य एवं जेल उपाधीक्षक दिलीप सिंह उपस्थित रहे। शिविर उपरांत बंदियों की समस्यायें सुनी गई।

जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक में गबन व धोखाधडी करने वालों पर कार्यवाही के निर्देश

समिति की बैठक में कलेक्टर ने दिए निर्देश

अनिल कुशवाह
पुष्पांजलि टुडे
शिवपुरी- कलेक्टर रवींद्र कुमार चौधरी ने जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित शिवपुरी में हुए गवन व धोखाध?ी में संबंधित के विरुद्ध कार्यवाही के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर रवीन्द्र कुमार चौधरी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में गत दिवस बैठक आयोजित की गई। बैठक में कमेटी के अन्य सदस्य पुलिस अधीक्षक रघुवंश सिंह भदौरिया, कोलारस अनुविभागीय अधिकारी पुलिस विजय यादव, मुकेश जैन उप आयुक्त सहकारिता, सुशील त्रिपाठी जिला अभियोजन अधिकारी तथा मुख्य कार्यपालन अधिकारी बैंक उपस्थित रहे।जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्या. शिवपुरी के मुख्य कार्यपालन अधिकारी ने बताया कि बैंक से सम्बन्धित प्रचलित गवन प्रकरणों में प्रभावी कार्यवाही एवं राशि बसूली के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही पुलिस अधीक्षक द्वारा भी कोलारस गवन प्रकरण में त्वरित ठोस प्रभावी कार्यवाही के लिए एसडीओपी कोलारस को निर्देश दिए गए।अभी कार्यवाही के चलते कोलारस गवन प्रकरण मे नोटिस के माध्यम से 7.15 लाख राशि वसूली बैंक में जमा हुई है।इसी प्रकार बैंक की सम्बद्ध शाखा बैरा? में हुए गवन राशि 5 लाख राशि जमा की गयी है। आगे भी इसी प्रकार कार्यवाही के निर्देश दिए गए हैं।

आलिया भट्ट

ने पति Ranbir Kapoor की इस EX गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप पर तोड़ी चुप्पी, बोलीं- सब बेहूदा?

अपनी शानदार फिल्मों से फैंस के दिलों को जीतने वालीं आलिया भट्ट को भला कौन नहीं जानता। अपने बिंदास को लेकर आए दिन आलिया का नाम चर्चा का विषय बना रहता है।अपने पति और एनिमल फिल्म कलाकार रणबीर कपूर को लेकर एक्ट्रेस कई मौके पर खुलकर बात कर चुकी हैं। हाल ही में आलिया ने रणबीर की एक एक्स गर्लफ्रेंड को लेकर अपनी चुप्पी तोड़ी है और बड़ा बयान दिया है।

रणबीर की एक्स को लेकर खुलकर बोलीं आलिया भट्ट

इस साल निर्माता करण जौहर की फिल्म रॉकी और रानी की प्रेम कहानी को लेकर चर्चा में रहने वालीं आलिया भट्ट ने हाल ही में रणबीर कपूर की एक्स गर्लफ्रेंड को लेकर बेबाक अंदाज में बात की है। हाल ही में आलिया ने दिग्गज बॉलीवुड एक्ट्रेस नेहा धूपिया के चैट शो में अपने हसबैंड रणबीर की एक्स गर्लफ्रेंड के साथ ब्रेक्रअप को लेकर खुलकर बात की है।दरअसल

आलिया से रणबीर कपूर और कटरीना कैफ के ब्रेकअप की मुख्य वजह को लेकर सवाल पूछा गया, जिस पर उन्होंने कहा- मैंने कई जगह पर पढ़ा जिसमें रणबीर और कटरीना के ब्रेकअप की वजह मुझे बताया गया है। ये मेरे लिए बेहद बेहूदा था, मुझे बिल्कुल भी ऐसा नहीं लगता की इस पर कोई स्पष्टीकरण देने की जरूरत है।इस तरह से आलिया ने रणबीर की एक्स कटरीना संग रिश्ते पर अपनी राय रखी है। इस बयान के बाद आलिया भट्ट का नाम लगातार सुर्खियां बटोर रहा है।

आलिया बिता रहीं शादीशुदा खुशहाल जीवन

लंबे समय तक रणबीर कपूर को डेट करने के बाद आलिया भट्ट ने बीते साल रणबीर कपूर के साथ शादी रचा ली। शादी के कुछ महीने के बाद नवंबर के शुरुआती हफ्ते में रणबीर और आलिया के घर बेटी राहा के रूप में एक नन्ही शहजादी आई।ऐसे में शादी के बाद से इस कपल को खुशहाल जीवन बिताते हुए देखा जाता है। जिसका अंदाजा आलिया भट्ट के सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए आसानी से लगाया जा सकता है।

ऋतिक रोशन

की एक्स वाइफ ने 11 साल छोटे ब्वॉयफ्रेंड को किया लिप-लॉक, Saba Azad के कमेंट ने खींचा ध्यान

बी-टाउन के हैंडसम हंक ऋतिक रोशन (Hrithik Roshan) और उनकी पत्नी सुजैन खान (Sussanne Khan) कभी पावर कपल कहे जाते थे, लेकिन दोनों ने साल 2014 में अपनी 14 साल की शादी को तोड़ अलग होने का फैसला किया। अब दोनों ही अपनी लव लाइफ में मूव ऑन कर चुके हैं।

ऋतिक रोशन जहां इन दिनों बॉलीवुड एक्ट्रेस सबा आजाद के साथ रिलेशनशिप में हैं। वहीं, सुजैन खान, अभिनेता अली गोनी के भाई व मॉडल अर्सलान गोनी (Arslan Goni) को डेट कर रही हैं। सुजैन ने जब से अर्सलान के साथ अपने रिश्ते को ऑफिशियल किया है, दोनों आए दिन रोमांटिक पिक्चर्स और वीडियोज को लेकर चर्चा में आते रहते हैं।ब्वॉयफ्रेंड को लिप-लॉक करती दिखीं सुजैन खान 19 दिसंबर 2023 को सुजैन खान ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर एक वीडियो शेयर किया है। क्लिप में सुजैन और अर्सलान की कई खूबसूरत और रोमांटिक मोमेंट्स हैं। एक जगह दोनों लिप-लॉक करते हुए भी नजर आ रहे हैं। वेकेशन, पार्टी और रोमांटिक डेट्स की तस्वीरों से भरा सुजैन और अर्सलान का वीडियो वायरल हो रहा है।

ब्वॉयफ्रेंड के लिए सुजैन खान ने किया नोट

सुजैन खान ने अर्सलान के साथ वीडियो शेयर करते हुए एक रोमांटिक नोट भी लिखा है। इंटीरियर डिजाइनर ने कहा, मेरे प्यार को जन्मदिन की शुभकामनाएं। आप मेरी जिंदगी का सबसे अच्छा तोहफा हैं। आपने मुझे पहले से ज्यादा खुशी दी है, जो मैंने कभी नहीं सोचा था। आपके देने की क्षमता अभिभूत करती है, इसलिए आप मुझे एक बेहतर इंसान बनाते हैं।

सुजैन ने आगे लिखा, मेरे प्यार, हम अपनी आत्मा के जरिए इस जिंदगी में धमाल मचा देंगे चाहे कुछ भी हो जाए। हर छोटी चिंगारी से हम अपने दिल को रोशनी से भर देंगे। चलो ये जर्नी शुरू करते हैं, क्योंकि हमने अभी शुरुआत की है। मैं आपको बहुत प्यार करती हूं। मैं सिर्फ आपको चाहती हूं। इस पोस्ट पर ऋतिक रोशन की गर्लफ्रेंड सबा आजाद ने कमेंट कर अर्सलान गोनी को बर्थडे विश किया है।

बिग बॉस हाउस में अपना बर्थडे मना रही हैं अंकिता, शेयर किया सेलिब्रेशन वीडियो

टीवी की अर्चना यानी एक्ट्रेस अंकिता लोखंडे (Ankita Lokhande) 19 दिसंबर को अपना 39वां जन्मदिन मना रही हैं। एक्ट्रेस का जन्म 19 दिसंबर 1984 को इंदौर में मराठी परिवार में जन्म हुआ था।अंकिता के लिए इस साल का जन्मदिन अब तक का सबसे अलग और खास है। दरअसल, इन दिनों अंकिता टीवी के फेमस शो बिग बॉस 17 में है और वहीं पति विक्की जैन और बाकी घर वालों के साथ अपना जन्मदिन मना रही हैं।

अंकिता का बर्थडे सेलिब्रेशन

जन्मदिन के मौके पर अंकिता के इंस्टाग्राम पर कुछ वीडियो शेयर किए गए हैं, जिसमें वह पति विक्की जैन के साथ बर्थडे केक कट करती नजर आ रही है। इस मौके पर एक्ट्रेस ने शिमरी सिल्वर कलर की ड्रेस पहनी हुई है। साथ पोज देती नजर आ रही हैं।

पति संग काटा केक

इस वीडियो में अंकिता पति संग बर्थडे केक काटती नजर आ रही है और कैप्शन में लिखा, हमारी और अपनी जिंदगी में चमक लाने वाले को जन्मदिन की शुभकामनाएं। हम सब तुम्हें बहुत प्यार करते हैं।

विक्की संग किया रोमांस

वीडियो के अलावा एक्ट्रेस ने पति संग कुछ रोमांटिक फोटो शेयर की है और कैप्शन में लिखा, आज, कल और हमेशा...वह हमेशा हमारी रानी है। उस व्यक्ति को जन्मदिन की शुभकामनाएं जो दुनिया की सारी खुशियों का हकदार है।

बता दें, ये फोटोज अंकिता की टीम इंस्टाग्राम पर शेयर कर रही है। बिग बॉस हाउस में जाने से पहले इस कपल ने बर्थडे का ये फोटोशूट करवाया था, जिसमें अब शेयर किया जा रहा है।

प्रेग्नेंसी की अटकलों के बीच अनुष्का शर्मा ने शेयर किया ये पोस्ट, फैंस से मिली बधाइयां

बॉलीवुड एक्ट्रेस अनुष्का शर्मा (Anushka Sharma) इन दिनों सेकंड प्रेग्नेंसी को लेकर चर्चा में हैं। एक्ट्रेस के कुछ ही महीनों में दोबारा मां बनने की खबर जोरों से फैली है। फैंस भी उम्मीद लगाए बैठे हैं कि दोनों जल्द ही प्रेग्नेंसी की अनाउंसमेंट करेंगे। इस बीच एक्ट्रेस का एक वीडियो सामने आया है, जिसे देखने के बाद फैंस ने उन्हें बधाई दी है।

प्रेग्नेंसी को लेकर लाइमलाइट में अनुष्का

अनुष्का शर्मा पिछले कई दिनों से दूसरी बार मां बनने को लेकर चर्चा में हैं। सोशल मीडिया पर उनकी कुछ तस्वीरें सामने आने के बाद इस बात की अटकलें लगना तेज हो गई कि एक्ट्रेस प्रेग्नेंट हैं। विराट या अनुष्का ने अभी तक इससे जुड़ी ऑफिशियल अपडेट शेयर नहीं की है, लेकिन अनुष्का के नए वीडियो ने इन खबरों को एक बार फिर तूल दी है।

क्या है मामला ?

एक्ट्रेस ने प्रेग्नेंसी किट का ऐड किया है। इस विज्ञापन को उन्होंने इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किया है। एक्ट्रेस के वीडियो पर फैंस के कमेंट्स की बौछार आ गई है। किसी ने लिखा, हम आपका इशारा समझ रहे हैं, बधाई हो। वहीं, एक ने लिखा, %इसका मतलब है कि आप दूसरी बार प्रेग्नेंट हो। कई फैंस ने अनुष्का को सेकंड प्रेग्नेंसी के लिए कॉन्गरैच्युलेट किया है।

बता दें कि हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट में बताया गया था कि अनुष्का शर्मा को मैटरनिटी क्लिनिक के बाहर देखा गया, जिसके बाद एक्ट्रेस के दूसरी बार प्रेग्नेंट होने की चर्चा शुरू हो गई।

अनुष्का शर्मा वर्कफ्रंट

एक्ट्रेस के वर्कफ्रंट की बात करें, तो उनकी झोली में डायरेक्टर प्रोसित रॉय की चकदा एक्सप्रेस है। फैंस पहली बार उन्हें क्रिकेटर के रोल में देखेंगे। अनुष्का इस मूवी में क्रिकेटर झूलन गोस्वामी के कैरेक्टर में होंगी। झूलन गोस्वामी महिला वनडे में सबसे ज्यादा गेंदबाज लेने वाली लेडी क्रिकेटर हैं।

आईसीएसआई ने आईएमएओं के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

कोलकाता। इंस्टीट्यूट ऑफ कंपनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया (आईसीएसआई) ने अपने सदस्यों के बीच व्यावसायिकता और विशेषज्ञता बढ़ाने के प्रयासों के तहत इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट अकाउंटेंट्स (आईएमएओं) के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। बैंगलुरू में आयोजित आईसीएसआई-सीआईआरसी के कॉरपोरेट सीएस पर दूसरे क्षेत्रीय सम्मेलन में आईसीएसआई और आईएमएओ के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। आईसीएसआई के अध्यक्ष सीएस मनीष गुप्ता ने बताया, 'हितधारकों की बढ़ती जरूरतों और अपेक्षाओं को समझना और पेशेवर ज्ञान और कौशल में लगातार सुधार करना जरूरी है। आईएमए के साथ सहयोग इसमें मददगार साबित होगा। इससे दक्षता बढ़ेगी और कामकाजी पेशेवरों की विभिन्न चुनौतियों के लिए नए मौके मिलेंगे।'

आईएमए के अध्यक्ष और सीईओ माइक डेप्रिस्को ने सहयोग के रणनीतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'हमारा दृष्टिकोण सहयोगात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों और प्रमाणपत्रों के माध्यम से कंपनी सचिवों को उनके पेशेवर कौशल और दक्षता बढ़ा कर सशक्त बनाना है। हमारी साझेदारी वित्त, शासन और रणनीति चुनौतियों का संयुक्त रूप से समाधान करने के लिए कंपनी सचिवों और अन्य हितधारकों के बीच चर्चा और साझेदारी की सुविधा प्रदान करेगी।

सरकार ने कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स फिर घटाया, नई दरें लागू

नई दिल्ली। कच्चे तेल के दाम में उतार-चढ़ाव के बीच केंद्र सरकार ने देश में उत्पादित कच्चे तेल पर लागू अप्रत्याशित लाभ कर (विंडफॉल टैक्स) में बड़ी कटौती की है। वहीं, डीजल के निर्यात विशेष अतिरिक्त उत्पाद शुल्क (एसएईडी) में कटौती की गई है। हालांकि, एविएशन टर्बाइन फ्यूल (एटीएफ) निर्यात पर लागू लेवी में इजाफा किया गया है। नई दरें लागू हो गई हैं। सरकार की ओर से जारी अधिसूचना के मुताबिक घरेलू स्तर पर उत्पादित कच्चे तेल पर विंडफॉल टैक्स की दर 5 हजार रुपये प्रति टन से घटा कर 1,300 रुपये प्रति टन कर दी गई है। इसके साथ ही डीजल के निर्यात पर मौजूदा एसएईडी को एक रुपये प्रति लीटर से घटा कर 0.50 रुपये प्रति लीटर कर दिया गया है। वहीं, एटीएफ के निर्यात पर लेवी शून्य से बढ़ा कर एक रुपये प्रति लीटर कर दी गई है। हालांकि, पेट्रोल पर एसएईडी अभी शून्य बना रहेगा। उल्लेखनीय है कि इससे पहले एक दिसंबर को केंद्र सरकार ने कच्चे पेट्रोलियम पदार्थों पर विंडफॉल टैक्स को 6,300 रुपये प्रति टन से घटा कर 5 हजार रुपये प्रति टन करने की घोषणा की थी। भारत सरकार ने अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की बढ़ती कीमत के जवाब में जुलाई, 2022 में पहली बार विंडफॉल टैक्स लगाया था।

विदेशी निवेशकों ने दिसंबर में इस साल का तोड़ा रिकॉर्ड, अब तक 54,757 करोड़ रुपये का निवेश

नई दिल्ली। विदेशी संस्थागत निवेशकों (एफआईआई) ने भारतीय शेयर बाजार में इस साल सबसे ज्यादा निवेश दिसंबर में किया है। इस माह अब तक एफआईआई ने 54,757 करोड़ का शुद्ध निवेश किया है। उदारीकरण के बाद वित्त वर्ष 1992-92 में इन निवेशकों ने भारतीय बाजार में निवेश की शुरुआत की थी। तब से अब तक किसी एक महीने में सर्वाधिक निवेश दिसंबर, 2020 में कोरोना के समय रहा था। उस समय 62,016 करोड़ का निवेश हुआ था। यह रिकॉर्ड इस महीने टूटने की संभावना है। अगर ऐसा हुआ तो 1992-93 के बाद दिसंबर पहला ऐसा महीना होगा, जो सर्वाधिक निवेश का रिकॉर्ड बना सकता है। दिसंबर में निवेश का नया रिकॉर्ड बनने का सबसे बड़ा कारण तीन राज्यों में भाजपा की विजय है। इसका संकेत यह है कि अगले साल आम चुनाव में पार्टी को तीसरी बार बहुमत मिलने की उम्मीद है। इससे आर्थिक सुधारों के साथ अर्थव्यवस्था में तेजी बने रहने की उम्मीद है। अब तक बड़े निवेश में अगस्त, 2022 में 51,204 करोड़, अगस्त, 2020 में 47,080 करोड़, नवंबर, 2020 में 60,358 करोड़ और इस साल जून में 47,148 करोड़ रुपये का निवेश था। एफआईआई के लगातार निवेश से सेंसेक्स ने 71,000 का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। डेट में भी एफआईआई निवेश इस साल 61,889 करोड़ रहा है। दरअसल, जेपी मॉर्गन अगले साल से अपने उभरते इंडेक्स में भारत के सरकारी बॉन्ड को शामिल करेगा। इससे विदेशी निवेशक डेट में निवेश बढ़ा रहे हैं। कैलेंडर साल के लिहाज से 2023 में अब तक इक्विटी में निवेश 1.60 लाख करोड़ हुआ है। 2020 में यह 1.70 लाख करोड़ और 2010 में 1.33 लाख करोड़ था।

कच्चा तेल 79 डालर प्रात बरल क पार, पेट्रोल-डीजल की कीमत स्थिर

नई दिल्ली अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की कीमत में तेजी जारी है। ब्रेंट क्रूड 79.18 डॉलर प्रति बैरल और डब्ल्यूटीआई क्रूड 73.44 डॉलर प्रति बैरल के करीब है। हालांकि, सार्वजनिक क्षेत्र की तेल एवं गैस विपणन कंपनियों ने पेट्रोल-डीजल की कीमतों में कोई फेरबदल नहीं किया है।

इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक बुधवार को राजधानी दिल्ली में पेट्रोल की कीमत 96.72 रुपये और डीजल 89.62 रुपये प्रति लीटर पर टिका हुआ है। वहीं, मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपये प्रति लीटर और डीजल 94.27 रुपये प्रति लीटर है। इसी तरह कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपये और डीजल 92.76 रुपये प्रति लीटर है, जबकि चेन्नई में पेट्रोल का भाव 102.63 रुपये और डीजल 94.24 रुपये प्रति लीटर है। अंतरराष्ट्रीय बाजार में हफ्ते के साथ 79.18 डॉलर प्रति बैरल पर ट्रेंड कर रहा है। वहीं, वेस्ट टेक्सस इंटरमीडिएट (डब्ल्यूटीआई) क्रूड भी 0.97

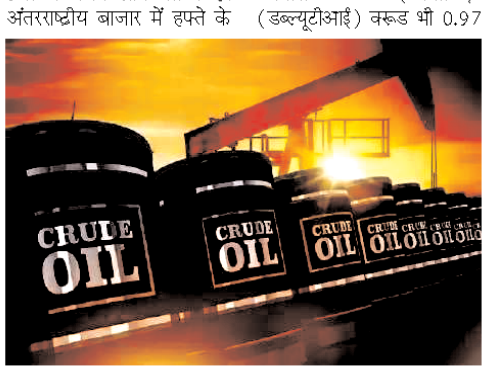

तीसरे दिन कारोबार की शुरुआत ब्रेंट क्रूड 0.05 डॉलर यानी 0.06 फीसदी की गिरावट के डॉलर यानी 1.34 फीसदी की उछाल के साथ 73.44 डॉलर प्रति बैरल पर कारोबार कर रहा है।

अनातम कर सग्रह विधयक, 2023 लाकसभा स पारत

नई दिल्ली। लोकसभा ने करों के अनंतिम संग्रह विधेयक, 2023 को ध्वनि मत से पारित कर दिया। इस विधेयक के जरिए साल 1931 के संबंधित अधिनियम को निरस्त करने का प्रावधान किया गया है।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद के निचले सदन लोकसभा में इस विधेयक पर हुई चर्चा का जवाब दिए जाने के बाद इसे ध्वनिमत से पारित कर दिया गया। सीतारमण ने 13 दिसंबर, 2023 को लोकसभा में करों का अनंतिम संग्रहण विधेयक, 2023 पेश किया था। यह विधेयक अनंतिम कर संग्रह एक्ट, 1931 को निरस्त करता है। इसमें सीमा शुल्क या उत्पाद शुल्क के अंतरिम अधिरोपण या वृद्धि का प्रावधान है।सीतारमण ने लोकसभा में चर्चा के दौरान कहा कि करों के अनंतिम संग्रह विधेयक, 2023 में 1931 के विधेयक के मौजूदा प्रावधानों को शामिल किया गया है। उन्होंने चर्चा का जवाब देते हुए सदन को बताया कि सट्टा गतिविधि को रोकने के लिए बजट में सीमा शुल्क और उत्पाद शुल्क दर में बदलाव को तत्काल प्रभाव से लागू करने के लिए यह प्रावधान हर साल लागू किया जाता है।

वित्त मंत्री ने कहा कि अंतरिम अवधि में उत्पन्न होने वाली किसी भी संभावित अस्पष्टता (या भ्रम) को दूर करने के उपाय के तौर पर इस विधेयक को लाया गया है। यह विधेयक टैरिफ वर्गीकरण में बदलाव के साथ या उसके बिना सीमा शुल्क या उत्पाद शुल्क लगाने या बढ़ाने से संबंधित कानूनों का प्रावधान करेगा, जो एक निर्धारित समय के लिए तत्काल प्रभाव से प्रभावी होगा।

सर्राफा बाजार में सपाट स्तर पर सोना, चांदी में गिरावट

नई दिल्ली। देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में सोना सपाट स्तर पर यानी बिना किसी उतार-चढ़ाव के कारोबार करता नजर आ रहा है। आज भी चेन्नई के अलावा देश के सभी सर्राफा बाजारों में सोना 63 हजार रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर से नीचे ही कारोबार कर रहा है। हालांकि चांदी के भाव में आज प्रति किलोग्राम 500 रुपये तक की गिरावट दर्ज की गई है। दिल्ली के सर्राफा बाजार में चांदी आज 500 रुपये की गिरावट के साथ 77,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है।

देश की राजधानी दिल्ली में आज 24 कैरेट सोना 62,770 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 57,550 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोना 62,770 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 57,4000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जबकि चेन्नई में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 63,110 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 57,850 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा कोलकाता में 24 कैरेट सोना 62,620 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 57,400 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर पहुंचा हुआ है।

लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 62,770 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 57,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं, पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 62,670 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 57,450 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 62,770 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 57,550 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी सोने की कीमत में आज कोई उतार-चढ़ाव नहीं दर्ज की गई है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरू, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 62,620 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। वहीं, इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना आज 57,400 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

एयर इंडिया ने सोशल मीडिया पर नए लोगो का शुरू किया इस्तेमाल

नई दिल्ली। टाटा समूह की अगुवाई वाली एयर इंडिया एयरलाइन ने अपने सभी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और वेबसाइट पर अपने नए ब्रांड लोगो का इस्तेमाल शुरू कर दिया है। इसके साथ ही एयर इंडिया ने 'पुरानी एयर इंडिया' से 'नई एयर इंडिया' में इसके पूर्ण परिवर्तन की घोषणा कर दी है।

एयर इंडिया अब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पोस्ट और इंस्टाग्राम पर नए लुक में दिख रहा है। एयरलाइन ने नए लोगों को अपनाने के साथ एक वीडियो पोस्ट में लिखा है, ''एयर इंडिया के साहसिक, गर्मजोशीपूर्ण और जीवंत अध्याय में आपका स्वागत है। संभावनाओं की खिड़कियों के माध्यम से हम भारतीय विमानन के एक नए युग की शुरुआत कर रहे हैं।''

इसी महीने एयर इंडिया ने अपने केबिन और कॉकपिट क्रू सदस्यों के लिए मनीष मल्होत्रा द्वारा डिजाइन की गई वर्दी की भी पहली झलक दिखाई थी। एयर इंडिया की नई वर्दी को सबसे पहले एयरबस ए350 विमान के चालक दल सदस्य को दिया जाएगा। इसके बाद नई वर्दी अगले कुछ महीनों में एयर इंडिया चरणबद्ध तरीके से इस्तेमाल में लाएगी।

अब हाउसईजी के प्लेटफॉर्म से एक बटन के क्लिक पर खरीद सकेंगे तैयार घर

नई दिल्ली। प्रोप-टेक स्टार्टअप हाउसईजी ने एंटलर और अन्य कंपनी के साथ मिलकर एक मिलियन डॉलर का फंड जुटाया है। हाउसईजी का उद्देश्य भारत में विशाल और असंगठित 75 अरब डॉलर के द्वितीयक रियल एस्टेट बाजार में घरों को खरीदना और बेचना आसान बनाने के लिए एक एंड-टू-एंड तकनीकी मंच का निर्माण करना है।

हाउसईजी के संस्थापक तरुण सैनानी और दीपक भाटिया के पास रियल एस्टेट उद्योग में 25 वर्षों से अधिक का संयुक्त अनुभव है। वे पहले गोदरेज प्रॉपर्टीज में एक साथ काम करते थे। इन दोनों ने 1.2 अरब डॉलर से अधिक की रियल एस्टेट बिक्री का प्रबंधन किया है। वे ग्राहकों के लिए एक बटन के क्लिक पर तैयार घरों को सुरक्षित रूप से खरीदने और बेचने के लिए हाउसईजी प्लेटफॉर्म का निर्माण कर रहे हैं, जो पारंपरिक ऑफलाइन प्रक्रिया की अक्षमताओं और जोखिमों को दूर करेगा। हाउसईजी के सह-संस्थापक तरुण सैनानी ने कहा कि भारत में पारंपरिक रूप से द्वितीयक लेन-देन किए जाते हैं, जिसमें खरीदारों और विक्रेताओं को बहुत जोखिम का सामना करना पड़ता है। भारत में एंटलर के पार्टनर राजीव श्रीवत्स ने कहा कि आवासीय संपत्तियों की दोबारा खरीद-बिक्री की प्रक्रिया टूट गई है। उन्होंने कहा कि प्राथमिक बाजार के विपरीत इस क्षेत्र में कोई विश्वसनीय ब्रांड नहीं हैं। श्रीवत्स ने बताया कि 75 अरब डॉलर का द्वितीयक रियल एस्टेट बाजार बढ़ते शहरीकरण की मजबूत प्रतिकूल परिस्थितियों के साथ बढ़ने के अलावा नवाचार के लिए तैयार है। इसमें हाउसईजी ने उपभोक्ताओं की ज़रूरतों के साथ आशाजनक शुरुआती रुझान दिखाया है।

एलजी में गहराया संपत्ति विवाद, कंपनी के चेयरमैन के खिलाफ मां और बहनों ने अपने हक के लिए दायर किया मुकदमा

नई दिल्ली। दुनिया की जानी-मानी कंपनी और दक्षिण कोरियाई समूह एलजी के चेयरमैन कू बॉन-मू का निधन 2018 में हुआ था। उस समय कम से कम सार्वजनिक रूप से ऐसा कोई अंदेशा नहीं था कि कंपनी में आगे चलकर संपत्ति के बंटवारे पर विवाद शुरू हो जाएगा। दस अरब डॉलर के समूह की पुरुषप्रधान परंपराओं को चुनौती देते हुए पूर्व चेयरमैन की विधवा और बेटियों ने उनके गोद लिए हुए बेटों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर दिया है। एलजी एक 10 अरब डॉलर का कॉरपोरेट साम्राज्य है जो पुरुष प्रधानता के सिद्धांत पर शासित है। इसका उत्तराधिकार प्रभावी रूप से 14 साल पहले तय किया गया था जब कंपनी के तत्कालीन चेयरमैन कू और उनकी पत्नी ने अपने सबसे बड़े भतीजे, कू क्वांग-मो को गोद लिया था। 1994 में दंपति के किशोर बेटे की मृत्यु के बाद परंपरा के कारण गोद लेने का यह फैसला लिया गया था, क्योंकि उन्हें सिर्फ बेटी थी।

शेयर बाजार में फिर बना मजबूती का रिकॉर्ड, निवेशकों को 46 हजार करोड़ का मुनाफा

नई दिल्ली। शुरुआती कारोबार में दबाव का सामना करने के बाद घरेलू शेयर बाजार ने आज शानदार रिकवरी की और एक बार फिर ऑल टाइम हाई का नया रिकॉर्ड कायम किया। आज के कारोबार की शुरुआत मजबूती के साथ हुई थी लेकिन दिन से पहले सत्र में ही मुनाफावसूली का दबाव बन जाने की वजह से शेयर बाजार के दोनों सूचकांक गिर कर लाल निशान में कारोबार करने लगे। हालांकि दिन के दूसरे सत्र के थोड़ी देर पहले ही बाजार में खरीदारों ने लिवाली का जोर बना दिया, जिससे सेंसेक्स और निफ्टी दोनों मजबूती के नए शिखर पर पहुंच गए। दिन भर के कारोबार के बाद सेंसेक्स 0.17 प्रतिशत और निफ्टी 0.15 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए। आज के कारोबार में पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइज, एफएमसीजी और एनर्जी सेक्टर के शेयरों में जम कर खरीदारी होती रही। इसके साथ ही इंफ्रास्ट्रक्चर और फार्मास्यूटिकल इंडेक्स भी बढ़त के साथ बंद हुए। ऑटोमोबाइल, आईटी, रियल्टी और मेटल सेक्टर के शेयरों में गिरावट का रुख बना रहा। ब्रॉडर मार्केट में आज मिला-जुला कारोबार होता नजर आया। बीएसई का मिडकैप इंडेक्स 0.31 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुआ। स्मॉलकैप इंडेक्स ने 0.10 प्रतिशत की तेजी के साथ आज के कारोबार का अंत किया। आज बाजार की तेजी के कारण स्टॉक मार्केट के निवेशकों की संपत्ति में करीब 46 हजार करोड़ रुपये का इजाफा हो गया।

बीएसई में लिस्टेड कंपनियों का मार्केट कैपिटलाइजेशन आज के कारोबार के बाद बढ़ कर 359.23 लाख करोड़ रुपये (अस्थाई) हो गया। पिछले कारोबारी दिन यानी सोमवार को इनका मार्केट कैपिटलाइजेशन 358.77 लाख करोड़ रुपये था। इस तरह निवेशकों को आज के कारोबार से करीब 46 हजार करोड़ रुपये का मुनाफा हो गया। आज दिन भर के कारोबार में बीएसई में 3,904 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें 1,911 शेयर बढ़त के साथ बंद हुए, जबकि 1,852 शेयरों में गिरावट का रुख रहा और 141 शेयर बिना किसी उतार चढ़ाव के बंद हुए। एनएसई में आज 2,138 शेयरों में एक्टिव ट्रेडिंग हुई। इनमें से 1,017 शेयर मुनाफा कमा कर हरे निशान में और 1,121 शेयर नुकसान उठा कर लाल निशान में बंद हुए। इसी तरह सेंसेक्स में शामिल 30 शेयरों में से 15 शेयर बढ़त के साथ और 15 शेयर गिरावट के साथ बंद हुए। निफ्टी में शामिल शेयरों में से 24 शेयर हरे निशान में और 26 शेयर लाल निशान में बंद हुए।

बीएसई का सेंसेक्स आज मजबूत शुरुआत का रिकॉर्ड बनाते हुए 164.19 अंक की मजबूती के साथ 71,479.28 अंक के स्तर पर खुला। कारोबार की शुरुआत होते ही बाजार में बिकवाली का दबाव बन गया, जिसके कारण सुबह 10 बजे के करीब ये सूचकांक 243.11 अंक टूट कर 71,071.98 अंक के स्तर पर पहुंच गया। इसके बाद से ही खरीदारों ने बाजार में लिवाली का जोर बनाने की कोशिश शुरू कर दी। दोपहर 12 बजे के थोड़ी देर पहले बाजार में चौतरफा लिवाली शुरू हो गई। लगातार हो रही खरीदारी के कारण आज का कारोबार खत्म होने के 1 घंटा पहले ये सूचकांक निचले स्तर से 550 अंक से भी अधिक की रिकवरी करके 308.62 अंक की मजबूती के साथ अभी तक के सर्वोच्च स्तर 71,623.71 अंक तक पहुंच गया। हालांकि आखिरी 1 घंटे में एक बार फिर मुनाफावसूली शुरू हो जाने के कारण सेंसेक्स ऊपरी स्तर से नीचे खिसक कर 122.10 अंक की बढ़त के साथ 71,437.19 अंक के स्तर पर बंद हुआ।

सेंसेक्स की तरह ही एनएसई के निफ्टी ने भी आज ऑल टाइम हाई ओपनिंग का नया रिकॉर्ड कायम करते हुए 59 अंक की उछाल के साथ 21,477.65 अंक के स्तर से कारोबार की शुरुआत की। शुरुआती कारोबार में मुनाफावसूली के दबाव की वजह से ये सूचकांक भी 80.90 अंक लुढ़क कर 21,337.75 अंक के स्तर पर पहुंच गया। इसके बाद खरीदारी शुरू हो जाने के कारण इस सूचकांक ने काफी तेजी से रिकवरी शुरू कर दी। बाजार में लगातार हो रही खरीदारी के सपोर्ट से दोपहर 2 बजे के बाद इस सूचकांक ने निचले स्तर से 165 अंक से भी अधिक की छलांग लगा कर 86.40 अंक की मजबूती के साथ अभी तक के सबसे ऊंचे स्तर 21,505.05 अंक तक पहुंचने में सफलता हासिल की। हालांकि बाद में मुनाफावसूली शुरू हो जाने की वजह से निफ्टी ऊपरी स्तर से नीचे फिसल कर 34.45 अंक की बढ़त के साथ 21,453.10 अंक के स्तर पर बंद हुआ। पूरे दिन के कारोबार के बाद स्टॉक मार्केट के दिग्गज शेयरों में से कोल इंडिया 5.55 प्रतिशत, नेस्ले 4.66 प्रतिशत, एनटीपीसी 2.13 प्रतिशत, टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स 1.73 प्रतिशत और सिप्ला 1.67 प्रतिशत की मजबूती के साथ आज के टॉप 5 गेनर्स की सूची में शामिल हुए। अडाणी पोर्ट्स 1.86 प्रतिशत, हीरो मोटोकॉर्प 1.75 प्रतिशत, एसबीआई लाइफ इंश्योरेंस 1.55 प्रतिशत, विप्रो 1.47 प्रतिशत और अडाणी इंटरप्राइजेज 1.32 प्रतिशत की कमजोरी के साथ आज के टॉप 5 लूजर्स की सूची में शामिल हुए।

लोकसभा से केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023 को मंजूरी

नई दिल्ली। लोकसभा ने केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023 को ध्वनि मत से पारित कर दिया। केंद्रीय माल और सेवा कर संशोधन विधेयक में अपीलीय न्यायाधिकरण (जीएसटीएटी) के अध्यक्ष और सदस्यों के लिए आयु सीमा बढ़ाने का प्रावधान है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा संसद के निचले सदन लोकसभा में विधेयक पर हुई चर्चा का जवाब दिए जाने के बाद ध्वनि मत से इसे पारित कर दिया। केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (दूसरा संशोधन) विधेयक, 2023 को 13 दिसंबर को लोकसभा में पेश किया गया था। ये विधेयक केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर (सीजीएसटी) अधिनियम, 2017 में संशोधन के लिए पारित किया गया है। इस अधिनियम में वस्तुओं और सेवाओं की अंतर-राज्य आपूर्ति पर सीजीएसटी लगाने और संग्रह करने का प्रावधान है। वित्त मंत्री ने विधेयक पर चर्चा के दौरान विभिन्न सदस्यों की ओर से पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए कहा बताया कि करदाताओं को हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में अपने लंबित मुकदमों को अपीलीय न्यायाधिकरण में लाने की छूट प्रदान की गई है। इस विधेयक में जीएसटी अपीलीय न्यायाधिकरण (जीएसटीएटी) के अध्यक्ष और सदस्यों के लिए आयु सीमा क्रमशः बढ़ाकर 70 वर्ष और 67 वर्ष करने के प्रावधान किए गए हैं, जो अभी क्रमश 67 वर्ष और 65 वर्ष है।

स्पाइसजेट एयरलाइन ने दिवालिया गो फर्स्ट के अधिग्रहण की इच्छा जताई

नई दिल्ली। नकदी संकट से जूझ रही सस्ती हवाई सेवा मुहैया कराने वाली कंपनी स्पाइसजेट ने दिवालिया विमानन कंपनी गो फर्स्ट के अधिग्रहण में रुचि दिखाई है। स्पाइसजेट दिवालिया विमानन कंपनी गो फर्स्ट की उचित जांच-पड़ताल के बाद प्रस्ताव पेश करने की योजना बना रही है।

स्पाइसजेट ने शेयर बाजार को दी जानकारी में कहा कि उसने 'गो फर्स्ट के समाधान पेशेवर (आरपी) के समक्ष रुचि दिखाई है। एयरलाइन ने कहा कि वह जांच-पड़ताल के बाद अधिग्रहण की पेशकश करना चाहती है। कंपनी के मुताबिक अधिग्रहण प्रस्ताव का मकसद गो फर्स्ट को स्पाइसजेट के साथ संभावित गठजोड़ में एक मजबूत और व्यावहारिक एयरलाइन बनाना है।

कंपनी ने बताया कि उसके निदेशक मंडल ने वित्तीय स्थिति को मजबूत करने और विकास योजनाओं में निवेश तथा संसाधन उपलब्ध कराने के उद्देश्य से करीब 27 करोड़ अमेरिकी डॉलर की नई पूंजी जुटाने की प्रक्रिया को मंजूरी दी है। हालांकि, स्पाइसजेट को सितंबर तिमाही के दौरान 428 करोड़ रुपये का शुद्ध घाटा हुआ था। वहीं, एयरलाइन को पूर्व प्रमोटर कलानिधि मारन को मध्यस्थता फैसले के बाद बकाया राशि का भुगतान भी करना है। उल्लेखनीय है कि गो फर्स्ट एयरलाइन ने 'प्रैट एंड व्हिटनी इंजन' समस्याओं की वजह से उत्पन्न वित्तीय संकट के बीच तीन मई से अपनी उड़ान सेवाएं बंद कर दी थी। फिलहाल कंपनी दिवाला समाधान प्रक्रिया से गुजर रही है। गो फर्स्ट पर लेनदारों का 6,200 करोड़ रुपये से ज्यादा का बकाया है।

तानसेन समारोह प्रसंगवशः जब तानसेन बोले अब दाहिने हाथ से किसी को जुहार नहीं करूँगा.

तानसेन ने एक तरह से राजा रामचंद्र की राजसभा में सदा के लिए रहने का मन बना लिया था। गान मनीषी तानसेन की मौजूदगी से राजसभा हमेशा संगीत कला से गुंजायमान रहती। इसी बीच जब जलाल खाँ कुर्ची ने तानसेन को ले जाने का शाही फरमान सुनाया तो राजा रामचन्द्र बहुत दुःखी हुए। तानसेन के वियोग की आशंका से उनकी आँखों से बच्चों के समान अश्रुधारा बह उठी। मुगल बादशाह अकबर ने सेना के साथ जलाल खाँ कुर्ची को तानसेन को लेने के लिये भेजा था। जाहिर है राजा रामचन्द्र तानसेन को सौंपने के लिये विवश हो गए। लोक इतिहासकारों ने राजा रामचन्द्र से तानसेन के वियोग की घटना का रोचक ढंग से वर्णन किया है। डॉ. हरिहर निवास द्विवेदी ने अपनी पुस्तक ÷तानसेन÷ में एक अनुश्रुति का हवाला देते हुए तानसेन की मार्मिक विदाई के बारे में विस्तार से उल्लेख किया है। वे लिखते हैं कि तानसेन को सौंपने की बात सुनकर राजा रामचन्द्र बच्चों के समान रो उठे। जैसे-तैसे समझा-बुझाकर तानसेन ने उन्हें शांत किया। राजा रामचन्द्र ने बहुमूल्य वस्त्र तथा मणि-माणिक्यों से जड़ित अलंकार भेंट कर तानसेन को एक चौडोल (विशेष प्रकार की पालकी) में बिठाया और पूरे नगर में विदाई जुलूस निकाला।

नगरवासी तानसेन को विदा करने काफी दूर तक जुलूस के अंदाज में साथ में चले। मार्ग में तानसेन को प्यास लगी और उन्होंने अपनी चौडोल रूकवाई। तानसेन देखते हैं कि स्वयं राजा रामचन्द्र उनके चौडोल की एक बल्ली को कंधा दिए हुए हैं। राजा के तन पर न वस्त्र हैं और न पैरों में जूते। यह दृश्य देखकर तानसेन भाव-विव्हल होकर रोने लगे। विदाई के ये मार्मिक क्षण देखकर साथ में मौजूद सैनिक तक अपनी आँखों के आँसू नहीं रोक सके। राजा रामचन्द्र ने अपने दिल को कठोर कर तानसेन से कहा कि हमारे यहाँ ऐसी रीति है कि जब किसी स्व-जन की मृत्यु हो जाती है तो उसके परिजन अस्थि विमान को कंधा देते हैं। मुगल बादशाह ने आपको हमारे लिए मार ही डाला है। बमुश्किल अपनी आँखों से बह रही अश्रुधारा को रोकते हुए तानसेन बोले राजन आपने मेरे लिए क्या - क्या कष्ट नहीं सहे। मैं आपके इन उपकारों का बदला चाहकर भी नहीं चुका सकता। पर मैं आज एक वचन देता हूँ कि जिस दाहिने हाथ से आपको जुहार (प्रणाम) की है, उस दाहिने हाथ से मैं अब दूसरे किसी भी शख्सियत को जुहार नहीं करूंगा। यह सुनकर राजा रामचन्द्र ने तानसेन की ओर से नजरें फेर लीं और दुःखी हृदय से अपनी राजधानी की ओर गमन किया तो तानसेन ने आगरा की राह पकड़ी। अनुश्रुति है कि तानसेन ने अपने वचन को जीवन भर निभाया।

राजा रामचन्द्र का पड़ाव रूखसत हुआ, तब तानसेन ने राग ÷बागेश्री÷ चौताला में एक ध्रुपद रचना का गायन किया। जिसके बोल थे ङ्क

÷आज तो सखी री रामचन्द्र छत्रधारी, गज की सवारी लिए चले जात बाट हैं।
कित्ते असवार सो हैं, कित्ते सवार जो हैं, कित्ते सौ हैं बरकदार अवर कित्ते आनंद के ठाठ÷ ।।

ग्वालियर के महान कला पारखी एवं संगीत मर्मज्ञ राजा मानसिंह की मृत्यु होने और उनके उत्तराधिकारी विक्रमादित्य से ग्वालियर का राज्याधिकार छिन जाने के कारण वहाँ के संगीतज्ञों की मंडली बिखरने लगी। उस परिस्थिति में तानसेन ग्वालियर से बृंदावन चले गए और स्वामी हरीदास से संगीत की उच्च शिक्षा प्राप्त की। आगरा के शासक इब्राहीम ने तानसेन को दरबार में आने का निमंत्रण भेजा। मगर तानसेन ने उस निमंत्रण को ठुकरा दिया। वे बैराग्य जैसा जीवन व्यतीत करने लगे। पर किसी अज्ञात कारण से तानसेन राजा रामचन्द्र की सभा की ओर आकर्षित हुए। राजा रामचन्द्र की राजसभा से वे पूरे हिंदुस्तान में विख्यात हो गए। उनकी ख्याति सुनकर मुगल बादशाह ने तानसेन को अपने दरबार में बुलाकर प्रतिष्ठित स्थान दिया। तानसेन जीवन पर्यन्त सम्राट अकबर के नवरत्नों में शामिल रहे।

जब तानसेन की तान से अचंभित हुए राजा रामचंद्रज.कलाओं के महान आश्रयदाता बघेलखण्ड के राजा रामचन्द्र की राजसभा को अनेक संगीतज्ञ और साहित्यकार सुशोभित करते थे। संगीत शिरोमणि तानसेन ने भी लंबे अर्से तक राजा रामचन्द्र की राजसभा की शोभा बड़ाई। राजा रामचंद्र के पास तानसेन के पहुँचने का समय लगभग 1557-58 ईसवी है। मगर रामचंद्र की राजसभा बांधवगड़ में तानसेन कैसे पहुँचे, इसका इतिहास में कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है। कहा जाता है जब इतिहास मौन साध लेता है वहाँ जनश्रुतियाँ मुखर हो उठती हैं। तानसेन के राजा रामचंद्र की राजसभा में पहुँचने और वहाँ से अकबर बादशाह के दरबार के लिए बांधवगड़ से उनकी विदाई के संबंध में बहुत ही मनोरंजक व मार्मिक किंवदंतियाँ मिलती हैं।

एक किंवदंती के अनुसार जब ग्वालियर की संगीत मंडली बिखरने लगी तब तानसेन ने भी बैरागी का भेष धारण कर ग्वालियर से बांधवगड़ की ओर प्रस्थान किया। जब वे बांधवगड़ के राजमहल की ओर बढ़ रहे थे तब महल के प्रहरी ने उन्हें रोक लिया और कहा कि बिना राजा की आज्ञा के आप महल में प्रवेश नहीं कर सकते। राजा का आदेश है कि जब वे पूजा में बैठे हों तो किसी को भी राजमहल में प्रवेश न दिया जाए। यह सुनकर तानसेन निराश नहीं हुए अपितु अपना तानपूरा लेकर राजप्रसाद के पीछे बैठ गए और तान छेड़ी कि

÷तू ही वेद, तू ही पुराण, तू ही हदीस, तू ही कुरान । तू ही ध्यान, तू ही त्रभवनेश÷ ॥

तानसेन के मधुर गायन से सम्पूर्ण महल गुंजायमान हो उठा। किंवदंती है कि महल के भीतर राजा जिस शिव-विग्रह की पूजा कर रहे थे तानसेन की गायकी के चमत्कारी प्रभाव से शिव मूर्ति का मुख राजा की ओर से हटकर उस ओर हो गया जिस ओर से तानसेन के गायन की स्वर लहरियां फूट रहीं थी। यह चमत्कार देखकर राजा रामचंद्र घोर आश्चर्य से भर गए और दौड़ते हुए महल के पीछे यह देखने के लिए पहुँचे कि आखिर इतना मधुर संगीत किसके कंठ से प्रस्फुटित हो रहा है। राजा रामचंद्र तानसेन के चरणों में गिर पड़े और क्षमा याचना माँगी। इसके बाद उन्होंने तानसेन को अपनी राजसभा में सम्मानजनक स्थान दिया।

ग्वालियर के अमर गायक संगीत सम्राट तानसेन के सम्मान में पिछले 98 वर्षों से ग्वालियर में शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में देश का सर्वाधिक प्रतिष्ठित महोत्सव ÷तानसेन समारोह÷ आयोजित हो रहा है।

खुले नलकूप व बोरवेल को सुरक्षित करने के लिए प्रतिबंधात्मक आदेश जारी

ग्वालियर। विभिन्न जिलों में खुले नलकूप व बोरवेल में बच्चों के गिरने की दुःखद दुर्घटनाओं को ध्यान में रखकर कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी अक्षय कुमार सिंह ने लोक हित में भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता की धारा-144 के तहत अहम आदेश जारी किया है। उन्होंने इस प्रतिबंधात्मक आदेश के जरिए कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी को जिले में एक ऐसा पोर्टल विकसित करने के आदेशित किया है, जिसमें नवीन नलकूप खनन की जानकारी, नलकूप खनन की मशीनों का पंजीयन और नलकूप खनन से जु? ठेकेदारों की जानकारी एवं जिले की सीमा के अंतर्गत सभी प्रकार के अनुपयोगी तथा खुले नलकूप-बोरवेल की जानकारी संकलित हो सके। साथ ही विभाग स्तर पर दल गठित कर इस संबंध में आवश्यक दिशा-निर्देश प्रसारित करने के निर्देश भी उन्होंने दिए हैं। जिला दण्डाधिकरी सिंह ने समस्त अनुपयोगी एवं खुले नलकूप, बोरवेल व ट्यूबवेल की जानकारी संकलित कर उन्हें सुरक्षित करने की तत्काल कार्रवाई करने के निर्देश भी दिए हैं। साथ ही आदेश में स्पष्ट किया है कि इस कार्य की लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभाग मॉनीटरिंग करे और पोर्टल पर इसकी जानकारी भी अद्यतन रखी जाए। संबंधित मकान मालिक, किसान, संस्था इत्यादि द्वारा खनित कराए गए ऐसे बोरवेल जिनका उपयोग नहीं किया जाता है। अथवा जिन बोरवेल में मोटर नहीं डली है व ढक्कन लगाकर बंद नहीं किए गए हैं, ऐसे समस्त बोरवेल व नलकूपों पर मजबूत ढक्कन/कैप लगाए जाने के आदेश कलेक्टर ने दिए हैं। साथ ही शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों के संबंधित कार्यपालक दण्डाधिकारी और जनपद पंचायतों के मुख्य कार्यपालन अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्र का भ्रमण कर यह व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिये निर्देशित किया है। यह आदेश आगामी आदेश तक प्रभावशील रहेगा। आदेश का उल्लंघन किए जाने पर संबंधित के खिलाफ भारतीय दण्ड विधान की धारा-188 के तहत कार्रवाई की जायेगी।

15 स्थानों पर एक साथ सजेंगीं तानसेन संगीत महफिल

ग्वालियर। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में देश ही नहीं दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित महोत्सव ÷तानसेन समारोह÷ के आयोजन की शुभ घड़ी आ गई है। समारोह के तहत 22 जनवरी को संगीत की नगरी ग्वालियर में 15 स्थानों पर एक साथ ÷तानसेन संगीत महफिल÷ सजेंगीं। इस दिन सायंकाल 6 बजे से इन स्थानों पर सुमधुर संगीत की स्वर लहरियाँ गूँजेंगीं। तानसेन संगीत महफिल की सभी तैयारियाँ पूरी कर ली गई हैं। कलेक्टर श्री अक्षय कुमार सिंह ने प्रत्येक कार्यक्रम स्थल पर व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित ढंग से अंजाम देने के लिए अलग-अलग अधिकारियों की तैनाती की है। साथ ही संस्कृति विभाग द्वारा भी व्यवस्थायें की गई हैं।

ये हैं संगीत महफिल स्थल और कलाकार-टाउन हॉल महाराज बाड़ा में 22 दिसम्बर को सायंकाल आयोजित होने होने जा रही संगीत महफिल में हेमांग कोलटकर का शास्त्रीय गायन और सुनील पावगी मोहनवीणा वादन से स्वर लहरियाँ बिखेरेंगे। बैजाताल पर आयोजित होने वाली तानसेन संगीत महफिल में सुदीप भदौरिया का ध्रुपद गायन व राजेन्द्र विश्वरूप द्वारा सुर बहार की प्रस्तुति होगी। ग्वालियर किले पर सजने वाली तानसेन संगीत महफिल

में सुश्री मीरा वैष्णव का गायन व उस्ताद सलमान का सारंगी वादन होगा। गंगादास की शाला की संगीत महफिल में भरत नायक का सितार वादन व महेश दत्त पाण्डे का शास्त्रीय संगीत गायन होगा। जयविलास पैलेस की संगीत महफिल में उमेश कम्पूवाले का शास्त्रीय गायन व श्रीयुत श्रीराम उमडेकर का सितार वादन होगा। हस्सू-हदू खाँ सभागार की संगीत महफिल में तेजस भाटे का ध्रुपद गायन व श्रीमती पद्मजा विश्वरूप के विचित्र वीणा वादन की प्रस्तुति होगी। द्वारिकाधीश मंदिर परिसर में सजने जा रही संगीत महफिल में सुश्री योगिनी ताम्बे का ध्रुपद गायन व जगत नारायण शर्मा का पखावज वादन होगा। राजा मानसिंह तोमर संगीत एवं कला विश्वविद्यालय की तानसेन संगीत महफिल में श्रीमती साधना गोरे का शास्त्रीय गायन व संजय राठौर के तबला वादन की प्रस्तुति होगी। शंकर गांधर्व महाविद्यालय की तानसेन संगीत महफिल में ईश्वर चन्द्र करकरे का शास्त्रीय गायन व अंकुर धारकर के वायोलिन वादन की प्रस्तुति होगी। इसी तरह माधव संगीत महाविद्यालय की संगीत महफिल में श्रीमती वीणा जोशी का शास्त्रीय गायन व श्री राशिद खान का सितार वादन होगा। तानसेन कलावीथिका की संगीत महफिल में जयंत गायकवाड़ का पखावज वादन व श्रीमती रंजना टोणपे का शास्त्रीय गायन होगा। दत्त मंदिर जीवाजीगंज पर 22 दिसम्बर को सजने जा रही तानसेन संगीत महफिल में वेदांत विपट का तबला वादन व प्रज्वल शिर्के के शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति होगी। आईआईटीटीएम की संगीत महफिल में अविनाश राजावत तबला वादन व यश देवले शास्त्रीय गायन की प्रस्तुति देंगे। इसी तरह लक्ष्मीनारायण मंदिर परिसर की संगीत महफिल में शिवांग दुबे का शास्त्रीय गायन व सुभाष देशपाण्डे का वायोलिन वादन होगा।

मेले की व्यवस्थाओं को लेकर कलेक्टर ने विभिन्न अधिकारियों को सौंपे दायित्व

ग्वालियर । इस साल के ग्वालियर व्यापार मेले में विभिन्न व्यवस्थाओं को अंजाम देने के लिये कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी अक्षय कुमार सिंह ने वरिष्ठ अधिकारियों को जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं। उन्होंने सभी अधिकारियों से चैकलिस्ट बनाकर व्यवस्थाओं को मूर्तरूप देने के लिये कहा है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजेश चंदेल व अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक ऋषिकेश मीणा को मेला परिसर में पार्किंग स्थल और उसके आस-पास के क्षेत्र पर मेला अवधि के दौरान समुचित पुलिस व्यवस्था लगाने और यातायात व्यवस्था सुचारू करने का दायित्व सौंपा गया है। इसी तरह अपर जिला दण्डाधिकारी टी एन सिंह को मेला अवधि के दौरान कानून व्यवस्था बनाए रखने और जांच दल गठित करने की जिम्मेदारी दी गई है। मेला सचिव निरंजनलाल श्रीवास्तव स्टॉल आवंटन व टेंट व्यवस्था की जिम्मेदारी निभायेंगे। कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण ओमहरि शर्मा एवं एसडीओ ईएण्डएम आर एस वैश्य मेला परिसर की समस्त स्टॉल, स्टेज एवं झूला सेक्टर में लगे झूलों के इन्स्टॉलेशन का सुदृीकरण, आवश्यक बेरीकेटिंग कराकर विद्युत सुरक्षा का

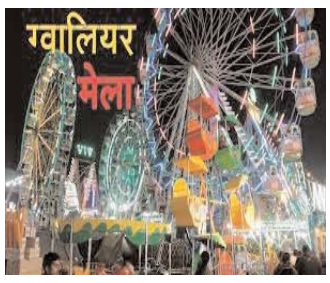

प्रमाण-पत्र प्रस्तुत करेंगे। महाप्रबंधक विद्युत वितरण कंपनी नितिन मांगलिक मेला प्रांगण की विद्युत व्यवस्था को सुदढ़ रखने की जिम्मेदारी निभायेंगे। अपर आयुक्त नगर निगम विजय राज को मेला परिसर में पेयजल एवं शौचालय की व्यवस्था सुदढ़रखने की जिम्मेदारी दी गई है। खाद्य सुरक्षा अधिकारी अशोक चौहान, जिला आपूर्ति नियंत्रक भीम सिंह तोमर एवं सहायक श्रमायुक्त श्रीमती संध्या सिंह मेला परिसर में लगने वाले खान-पान के स्टॉल व दुकानों की जाँच कर नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई करेंगे। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. राजौरिया मेला प्रांगण में आगुंतकों, दुकानदारों इत्यादि के लिए स्वास्थ्य सेवाएँ मुहैया कराने के लिए चिकित्सकों की टीम तैनात करेंगे और रोस्टर के अनुसार चिकित्सकों की ड्यूटी लगायेंगे। साथ ही मेला परिसर में दो एम्बूलेंस की व्यवस्था भी करेंगे। क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी एस के सिंह मेला परिसर एवं उसके आस-पास के क्षेत्र में पार्किंग की समस्त व्यवस्थायें सुनिश्चित करायेंगे।

10 समितियाँ गठित -ऐतिहासिक श्रीमंत माधवराव सिंधिया ग्वालियर व्यापार मेला के आयोजन की तैयारियाँ जारी हैं। मेले से संबंधित सभी व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित ढंग से अंजाम देने के लिये 10 समितियाँ गठित की गई हैं।

सीएम यादव बोले- भाजपा का संकल्प पत्र रामायण-गीता की तरह, कोई योजना बंद नहीं होगी

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि मध्य प्रदेश की कोई योजना बंद नहीं होगी। मध्य प्रदेश में पैसे की कोई कमी नहीं है। लाडली बहना के लिए जो तारीख नियत है उसी पर राशि डाली जा रही है। सीएम ने गुरुवार को राज्यपाल के अभिभाषण पर कृतज्ञता प्रकट करते हुए अपनी बात रखी। उन्होंने कहा कि भाजपा का संकल्प पत्र धर्म ग्रंथ रामायण-गीता की तरह है। संकल्प पत्र के वादे को अक्षरशः पूरा किया जाएगा। 5 साल की सरकार में हर वादे पूरे होंगे। ये एक दिन की सरकार नहीं है, न ही 15 महीने की सरकार है। हम पांच साल बाद बात करेंगे। उन्होंने कहा कि पश्चिम के लोगों ने भारतीय संस्कृति को लज्जित करने का काम किया है। कुछ लोग सूर्य उदय से दिन की शुरुआत करते हैं, जबकि कुछ सूर्यास्त के बाद जागते हैं। सीएम ने कहा कि मोदी ने दुनिया में देश का मान बढ़ाया है। ऐसे में उनका जिक्र तो होगा ही। सीएम यादव ने कहा कि कांग्रेस के कारण विक्रम संवत की परंपरा खत्म हुई है। आदित्यनाथजी ने कोट किया 2 हजार साल पहले विक्रमादित्य ने अयोध्या का मंदिर बनाया। दुनिया में तीन भाई प्रसिद्ध हैं राम-लक्ष्मण, कृष्ण-बलराम और विक्रमादित्य-भर्तृहरि। नई शिक्षा नीति लागू कर गलती सुधारी गई है। उन्होंने कहा कि 55 एक्सीलेंस कॉलेज खोले जाएंगे। रजिस्ट्री के साथ नामांतरण होगा। सुप्रीम कोर्ट के तीन तलाक का फैसला कांग्रेस ने लोकसभा में बदला। कांग्रेस ने राम मंदिर के मामले को भी अटकाया। सीएम ने कहा कि जो यात्री अयोध्या जाना चाहेंगे उन्हें तीर्थ दर्शन योजना से अयोध्या भेजा जाएगा। ट्रेन, बस से मध्य प्रदेश की जनता को सरकार राम लला के दर्शन के लिए अयोध्या भेजेगी। हम राम भक्तों का स्वागत करेंगे। राम भक्तों के लिए मध्य प्रदेश की सरकार फूल बिछाएगी।

विवेक पोरवाल ने जनसम्पर्क आयुक्त का पदभार ग्रहण किया

सचिव जनसम्पर्क विवेक पोरवाल ने जनसम्पर्क आयुक्त का पदभार ग्रहण किया। उन्होंने जनसम्पर्क संचालनालय में कार्यभार ग्रहण करने के बाद अधिकारियों की बैठक ली। जनसम्पर्क आयुक्त पोरवाल ने जनसम्पर्क की कार्यप्रणाली की वरिष्ठ अधिकारियों से जानकारी प्राप्त करते हुए बेहतर तरीके से कार्य करने के निर्देश दिये। उन्होंने विभाग के विभिन्न प्रभागों में किये जा रहे कार्यों की जानकारी भी प्राप्त की। उन्होंने म.प्र. माध्यम में भी प्रबंध संचालक (एम.डी.) का पदभार ग्रहण किया।

25 को मनाया जायेगा ब्राह्मण गौरव दिवस और सकल ब्राह्मण युवक युवती परिचय सम्मेलन

गवालियर। 25 दिसंबर को देश के दो भारत रत्न ब्राह्मणों का जन्म दिवस होने पर जहां ब्राह्मण युवक युवती परिचय सम्मेलन होगा। वहीं ब्राह्मण रत्नों को लेकर ब्राह्मण गौरव दिवस मनाया जायेगा। वहीं त्रि दिविसीय समारोह भी 23 दिसंबर से होगा। इस अवसर पर विवाह योग्य परिचय सम्मेलन के साथ ही राज्य के समाज सेवियों एवं ब्राह्मण विधायकों का सम्मान तथा ब्राह्मण बालिकाओं को ब्रह्म स्वर्ण लक्ष्मी सम्मान सोने की लोंगे , स्मृति चिन्ह, श्रीफल सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया जायेगा। उक्त जानकारी आज पत्रकारों को देते हुये सकल ब्राह्मण परिचय सम्मेलन के संस्थापक डॉ जयवीर भारद्वाज ने बताया कि कार्यक्रम से पहले 22 दिसंबर को सायंकाल 05:15 बजे से परिचय सम्मेलन के लिए भूमि पूजन होगा। इस अवसर पर भूमि पूजन समाज सेवी भगवती प्रसाद शर्मा करेंगे जबकि उनके साथ रजिस्टार डॉ दिनेश गौतम भी मौजूद

रहेंगे। भूमि पूजन कार्यक्रम की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष प्रकाश नारायण शर्मा करेंगे। वहीं समिति के फैसले के अनुसार भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी जी के जन्म शताब्दी समारोह के तहत सिंधी कालोनी में 23 दिसंबर को श्रद्धेय अटल जी के परिजन श्रीमती कान्ता जी , दीपक वाजपेयी , अनूप शोभा जी को अटल रत्न से सम्मानित किया जायेगा। 24 दिसंबर को सायं पांच बजे अटल जी के पैत्रिक निवास कमल सिंह का बाग के शिन्दे की छावनी लश्कर पर देशी घी के एक सौ दीपक जलाये जायेंगे। साथ ही लडडुओं का प्रसाद वितरण भी किया जायेगा। 25 दिसंबर को सुबह 11 बजे से चेंबर ऑफ कामर्स में श्रद्धेय आनन्द नारायण गौड एवं श्रीमती मघु भारद्वाज सभागार में श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म शताब्दी जयंती एवं भारत रत्न महामना पं मदन मोहन मालवीय की जयंती पर 12 वां निशुल्क सकल ब्राह्मण युवक युवती परिचय सम्मेलन होगा। इसमें लगभग 700 से अधिक युवक युवती अपना परिचय देंगे। वहीं इसमें विदेश के भी युवक युवती भाग लेने आ रहे हैं। स्कल ब्राह्मण युवक युवती परिचय सम्मेलन की भोजन समिति के संयोजक प्रेमनारायण मिश्रा , भोजन प्रभारी विक्रम शर्मा श्रीमती स्वेता शर्मा ने बताया कि 25 दिसंबर को 12 बजे से 03 बजे तक सभी कूपन धारियों को भारतीय पद्धति से महिलाओं द्वारा स्वरूचि सह भोज कराया जायेगा। महिला अध्यक्ष वीना भारद्वाज ने बताया कि महिलाओं द्वारा पीले चावल देकर लगभग 3000 महिलाओं से संपर्क किया जा चुका ह

मोहन मंत्रीमंडल संभवतः अटलजी के जन्मदिवस पर शपथ लेगा?

भोपाल। मध्यप्रदेश मंत्रीमंडल का गठन अब कभी भी हो सकता है, ऐसी संभावना है कि मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव संभवतः 25 दिसंबर को अटलजी के जन्मदिवस पर शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन करवा सकते हैं। मुख्यमंत्री ने मंत्रीमंडल के लिये अपनी ओर से पूरी तैयारी कर ली है, सिर्फ आलाकमान की स्वीकृति बची हैं। हालांकि अभी मंत्रीमंडल का गठन और शपथ ग्रहण समारोह की तिथि तय नहीं है। आज देर सायं मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव संभावित मंत्रियों की सूची लेकर नईदिल्ली पहुंच गये है, वह वहां पार्टी अध्यक्ष जेपी नडडा सहित अन्य वरिष्ठ नेताओं से भी विचार विमर्श करके नामों की सूची को फाइनल करेंगे। मंत्रीमंडल के लिये नये और पुराने दोनों ही स्तर समायोजन किया जायेगा।

स्वामी, प्रकाशन, मुद्रक एवं संपादक भरत सिंह चौहान द्वारा वॉइस ऑफ मध्यांचल मीडिया नेटवर्क प्राइवेट लिमिटेड 101 वैष्णोपुरम एबी रोड बिरलानगर ग्वालियर म.प्र. 474004 से मुद्रीत करा कर दीपू इलेक्ट्रॉनिक हनुमान मंदिर के पास भिण्ड रोड गोले का मंदिर जिला ग्वालियर मध्यप्रदेश 474005 से प्रकाशित। भरत सिंह चौहान पी. आर. बी. एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार। E-mail : Pushpanjalitoday@gmail.com 0751-4050784, Mob.:8269307478